महाराष्ट्र के पुरस्कृत एकांकी

महाराष्ट्र के पुरस्कृत एकांकी

छायानुवादक
सगीर अहमद चौधरी

कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर

[इन एकांकियों के मंचन, अन्य भाषा में रूपांतरण, फिल्मीकरण व रेडियोकरण करने से पूर्व मूल मराठी लेखकों की अनुमति परम आवश्यक है।]

प्रकाशक जयकृष्ण अग्रवाल
कृष्णा ब्रदर्स
महात्मा गांधी मार्ग अजमेर

मुद्रक स्वस्तिक प्रिंटर्स हाथी भाटा, अजमेर

संस्करण प्रथम 1959

आवरण प्रकाश आर्ट [illegible]

मूल्य : [illegible] मात्र

भूमिका

जहाँ तक महाराष्ट्र के साहित्य का प्रश्न है, मैं अभिमान पूर्वक यह कह सकता हूँ कि मराठी साहित्य राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा एवं साहित्य को सराहनीय योगदान करता आया है। इस बात को कतई भुठलाया नहीं जा सकता है। इसी लिए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि आज मैं आप (नाट्य-प्रेमियों) के बहुत ही करीब हो रहा हूँ।

आज जो हिन्दी रंगमंच पर नाटकों का अभाव है, वह बंगाली रंगमंच और मराठी रंगमंच पर नहीं है। बस इसी अभाव को ध्यान में रखते हुये, मैंने मराठी नाटकों एवं एकांकियों को अनुवाद करने का बीड़ा उठाया है। अब चूँकि मैं खुद महाराष्ट्र में बम्बई का रहवासी हूँ एवं मेरी शिक्षा-दीक्षा यहीं हुई इसलिए मुझे मराठी भाषा को समझने और बोलने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती है और रहा सवाल हिन्दी का तो वह मुझे विरासत में मिली है। अतः छायानुवाद करते समय और भी मजा आया।

छायानुवादित एकांकियों की एक विशेषता यह भी है कि इन सभी लघु-नाटकों को महाराष्ट्र में कई प्रतियोगिताओं में अब तक कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। कहने का मतलब यह है कि ये सारे एकांकी मराठी रंगभूमि के श्रेष्ठ एकांकी हैं।

अब मैं छायानुवादक के रूप में कहाँ तक सफल हो चुका हूँ निर्णय पाठकों के हाथों में है क्योंकि निर्णय करने का पूर्ण अधिकार मैं आपको ही सौंपता हूँ।

मैं प्रकाशक कृष्णा ब्रदस का, मूल मराठी लेखक का, अपने बुजुर्गों का, एव रगमच सहयोगियो का विशेप आभारी हू जिहोने मुझे इस काय म, समय-समय पर मागदशन और अपना पूण सहयोग दिया ।

यदि किसी शब्द या मचन म कोई आपत्ति हो तो बेहिचक आप मचप्रेमी, छायानुवादक स पत्र व्यवहार कर सकते है ।

सगीर अहमद चौधरी

१/१८ बादरी हाऊस
गणेश नगर मरोल नाका,
अंधेरी (पूर्व)
बम्बई ४०० ०५९

युवा रंगकर्मियों के नाम

अनुक्रमणिका

भाषानुवाद—''सगीर अहमद चौधरी '

"जगु देशपाण्डे की अजब दास्तान"

[रंगमंच प्रकाशित होता है दाहिने तरफ देशपांडे का घर दिखाई देता है। लोगो की भीड जमा है औरतें रो रही हैं घर के बाहर अर्थी पड़ी है, अंतिम तयारियाँ चल रही हैं। क्योंकि आज जगन्नाथ देशपांडे की मृत्यु हो गई। सभी लोगो पर दु:ख का पहाड टूट पडा है। एक आदमी हाथ मे मटकी पकडता है, शेष चार अर्थी उठाते हैं। औरतें जोर से रोती हैं श्मशान भूमि की यात्रा आरम्भ होती है। इसी यात्रा के समानांतर एक आदमी दौडता हुआ दिखाई पडता है, सदा नाक की सीध मे चलने वाला, मध्यमवर्गीय, यही है वह, जगन्नाथ देशपांडे]

सभी जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम,
जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम।

एक आज यानि रविवार, यानि एक डिसेम्बर।
जगन्नाथ देशपांडे की अचानक मौत।

दूसरा ऊपर दूसरे मंजिले के निवासी देशपांडे सबको छोडकर चल बसे।

तीसरा इन शार्ट जगू का दी एण्ड।

चौथा साला देशपांडे चूतिया खल्लास।

मूल मराठी रचनाकार "जयंत पवार"

सभी जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम।

एक देशपांडे, असिस्टेण्ट क्लर्क गवर्नमेण्ट डिपार्टमेण्ट इमारत क्रमांक 14 मे रहने वाले, दूसरी मंजिल, दाहिने तरफ का आखिरी मकान, बरसातो मे खास बरसाती पानी टपकाने वाला।

सभी जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम।

दूसरा जगन्नाथ देशपांडे, कद 5 फुट चार इंच, सिर पर हमेशा चन्दन पोतने वाले ईश्वर मे सदैव आस्था रखने वाले।

सभी जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम।

चौथा साला देशपांडे तो गया, मगर हमारा तो पूरा सण्डे खराब कर गया। वैसे बेचारा था एकदम सीधा साधा। हमारी बिल्डिंग की एक मशहूर हस्ती, सबका लाडला, उधर घर मे पत्नी गर्भवती

तीसरा गर्भवती ? यह अगर पहले बताता तो, क्या मारी जाती तेरी मती।

चौथा इजण्ट मटर आप बनते-बनते चल बसा।

सातवां (आगे मटकी पकड़ने वाला) प्यार जगुभाई, तू हमें छोड़कर चला गया और हम अनाथ हो गये। तेरा स्नेह और प्यार हमारे लिए आज बैरी हो गया। तू जब जिन्दा था तो सारी बिल्डिंग म सूर्य की किरणों की तरह हमेशा खुशियां छाई रहती थी। तुम्हारे मुख में सदा सच्ची और खरी बातें निकलती थी। सारा वातावरण कितना पवित्र लगता था तू इतनी जल्दी चला जायेगा हमे अब भी यकीन नहीं हो रहा है। इधर भाभी बेचारी गर्भवती। उनका

दु:ख और भी बढ़ा ! उनको अब कौन सभालेगा ? जगु भाई ऐसे विकट समय मे ऐसा घात किया । अब आनेवाला हर हवा का झोंका तेरी याद लेकर आयेगा ।

एक नरेन्द्र वर्मा—

दूसरा बजरंगी चाचा—

तीसरा शंकर प्रसाद—

चौथा 79 स्पोर्टस क्लब'

सभी जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम,
जयराम श्रीराम जयराम श्रीराम ।

देशपांडे बस-बस बन्द करो रोना धोना—बेबुनियादी, दिखावटी, बेसुर हारमोनियम की तरह—बन्द करो प्लीज—बन्द करो यह कर्कश जयराम श्रीराम का शोर, स्टापइट, स्टापइट आई से !

सभी जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम ।

देशपांडे सालो—कम से कम मरने के बाद तो सुनो । बन्द करो, बेफिजूल रोना-पीटना प्लीज बन्द करो तुम्हारा यह शोक गीत येस आई एम हैप्पी—मैं तो बहुत ही खुश [redacted] आज—विकास देशपाण्डे इज डेड टुडे—साला मेरे साथ स्वयं से पिछले पैंतीस सालो से छल-कपट करने वाला, देशपांडे को आज छोड़कर चला गया—माई डियर ब्रदर एण्ड सिस्टर टुडे इज माई इन डिपेंडेंस डे—आज मैं आजाद हो गया हूँ—मुक्त हो गया हूँ—आज मुझे पख लग गये हैं—इसीलिये कहता हूँ, प्रार्थना करता हूँ, बन्द करो शोक गीत, बन्द करो रोना-

घोना—आज तो नाचो-गावो, मजा करो, खुशियाँ मनाओ !

सभी जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम !

देशपांडे (दर्शकों को) शायद आप लोगों को ताज्जुब हो रहा होगा कि अभी थोड़ी देर पहले मरा देशपांडे अपनी ही शवयात्रा में नाच रहा है ! पर मुझे तो, एब्सल्यूटली तो, जरा भी गम नहीं। चार-चार घंटे मंदिर के बाहर लाइन लगाकर देशपांडे भगवान को कभी खुश नहीं कर सका, पर भगवान देशपांडे की मृत्यु के बारे में इतना एफिशिएंट हो सकता था ? घोर आश्चर्यजनक बात है, है न ? एक राज की बात बता रहा हूं आपको यहाँ अपना कोई नहीं—दरवाजे पर खड़ा होने वाला मित्र अपना नहीं—एम्पलायमेंट एक्सचेंज में काल करने वाला आफिसर अपना नहीं—गैस का नम्बर निकालने वाला एजेंट अपना नहीं खाते समय अन्न अपना नहीं— दिमाग में आने वाले विचार अपने नहीं - आफिस में साहब अपना नहीं— पानी देने वाला प्यून अपना नहीं— सबके सब बस पराये पराये से सत्य है तो केवल दूरियाँ, आदमी से आदमी की दूरियाँ जो सदैव दूर से तमाशा देखना अपना कर्तव्य समझती हैं। और ऐसी भीड़ लगातार हमारे आपके, नजदीक, चौक में ऑफिस में— सड़क पर— गाड़ियों में— घर के सामने वाली खिड़की में— बस इसी तरह फैली हैं— खजूर के पेड़ की तरह जिसका न फल काम आता है और न ही छाया। हमेशा लगता रहता है कि यहाँ सब अपने हैं। पर अच्छा हुआ आज वह

रिश्ता भी टूट गया, ईश्वर तुझे कोटिश धन्यवाद ! थैंक्स ए लाट । एक मिनट, नही, शायद वैसे सभी पराये नही होते इस समय मन मे आनद की एक लहर दौड रही है, पता नही क्यो ? बार-बार मन कह रहा है, भगवान बकार म जल्दी कर दी । थाडे दिन और रुक जाता तो क्या बिगड जाता ? इन पैंतीस सालो म याद रखने वाला केवल वह एक क्षण

(मच के दूसरी ओर श्रीमती देशपाडे को सात्वना देते हुए एक पडोसन)

श्रीमती देशपाडे (रोकर) केवल दो दिन और रुक जाते तो डाक्टर ने परसों की ही तारीख दी थी पर यह सब इतनी जल्दी –

पडोसन चुप हो जा बहन, चुप हो जा ऐसी बातें अपने हाथो म नही होती

श्रीमती देशपाडे यानि तुम्हारे भी मिस्टर ?

पडोसन आटो मे बैठते ही पाच ही मिनट में

श्रीमती देशपाडे वह हमेशा कहा करते थे कि पहले लडका होगा, मैं ही बेवकूफों की तरह झगड पडती कि लडकी होगी । अब मुझे क्या पता था कि वह अचानक

पडोसन चुप हो जा, चुप हो जा

देशपाडे इतनी जल्दी चल बसूगा किसी को भी पता न था, अर्थात मुझे भी नही । और दो दिन नही मरता तो तो तो सम्पूर्ण जीवन का चीज हो गया होता, बस केवल यही एक क्षण था चीज होने का, वरना शेष जीवन का

तो सँडवीज ही हो गया था। पर साला हमारी कभी किसी ने सुनी जो ऊपरवाला सुनता

सभी जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम।

देशपाडे मत सुनो मत सुनो अवसरवादियों, मत सुनों

पाचवा (छठे से) अजी सुनिये, भाई साहब शु शु शु आपको कुछ पता चला ?

छठवा क्या ?

पाचवा आपके पडोसी गये देशपाडे जी

छठवां कहा गये हमारे कौनसे पडोसी ?

पांचवा अरे वही जनाब कन्स्ट्रक्शन डिपाटमेट वाले, (छठां याद करने की कोशिश करता ह पर याद नही आता) अरे वही यार ठीक साढे दस बजे आफिस मे पहुँचने वाले बहुत कम बोलने वाले—(अभी भी याद नहीं आता ह) अरे यार वही कॅंटीन मे खुद के चाय के पैसे खुद ही देने वाले। वही यार! उन्ही साहेबान की यह शवयात्रा!!

छठवा ऐसा क्या (याद न आते हुये भी) बहुत बरा हुआ अरे अरे बहुत बुरा हो गया

पाचवा वही तो! यह भी क्या जाने की उम्र है ?

छठवा दखो न यार कल मरता तो कम से कम एक सी एल तो ठान सकता था। ठीक है चलो पर अभी याद क्यो नही आ रहा है कौन देशपाडे ? याद नही आता।

देशपाडे उसे कभी नही याद आयगा! आफिस मे मेरी बगल के टेबल वाला भी मुझे याद रखे, ऐसा कुछ भी न था मेरे पास। आफिस म किसने, किसकी टोपी बदली और किसन, कसे जिसकी मारी केवल ऐसे ही लोगो को याद रखा जाता है।

और मेरे पास तो ऐसा एक भी किस्सा नहीं। ऐसे कार्य निश्चित करके भी मैं नहीं कर सकता था। वही साला, हम मिडल क्लास वालों की, आत्मा की आवाज का इजार। सच कहूँ तो, यह पराये-पराये से लगने वाले, जिंदगी भर टोपी पहनाने वाले लोग, जिन-जिन के सिरों पर टोपियाँ बदली, उनमें एक सर मेरा भी था, ऐसा मुझे लग रहा था जिंदगी भर! (विराम) मैं यह बार बार जिंदगी भर-जिंदगी भर रट रहा हूँ, आप लोगों को बहुत ही मेलोड्रैमेटिक लग रहा होगा। है न ? पर लेखक ने स्वयं ही इस तरह के संवाद लिखे हैं। वैसे आप लोगों को रिझाने के लिये दुष्ट विनोद भी इसमें हैं। पर जिसके संसार का, सम्पूर्ण जीवन का, लड़कपन का, जवानी का एक मेलोड्रामा हो गया, उसके डायलाग मेलोड्रमेटिक नहीं होंगे क्या ? बोलिये न चुप क्यों हैं ? नहीं होंगे ? (विराम) जवानी का मेलोड्रामा ! बचपन कब आया और कब गुजर गया पता भी नहीं चला, याद रहा तो केवल अल्पायोर अवस्था में आने वाली जवानी ! वह भी पूरी जिंदगी भर नहीं—सिर्फ कुछ ही पल बदलते मौसम की तरह लगने वाले वह कुछ पल

[जगन्नाथ देशपांडे अपने कमरे में बैठा है। एक लड़की जिसके हाथ में एक पेन और किताब है, फिल्मी चाल-चलते हुये प्रवेश करती है। खिड़की पर आकर खड़ी होती है।]

लड़की ऐ — शे शु शु

जगु कौन है ?

लड़की मैं पूजा ! अन्दर आऊँ ?

जगु   हाँ ?

लड़की   ए, तू इंटर में है न ?

जगु   हाँ !

लड़की   साइंस या आर्ट्स ?

जगु   साइंस।

लड़की   फिर तो अन्दर आती हूँ। वह क्या है कि एक सवाल ही नहीं आ रहा था मां बोली पडाम के देशपांडे जी, के जगु के पास जा

जगु   कौनसी क्लास में है तू ?

लड़की   इस बार एम एस सी में। फॉर्म भी बोर्ड को चले गये।

जगु   कौनसा सवाल है ?

लड़की   (किताब खोलकर) यह क्या

[दोनों गणित हल करने के लिए झुकते हैं। फ्रीज।]

जगु   (दर्शकों में) वैसे मैं ज्यादा होशियार तो नहीं था, पर गधा भी नहीं था—हमारे समय बोर्ड की पहली एस एस सी पचपन प्रतिशत लेकर पास की। गणित कम ठीक थी, पर किसे मालूम। पूजा की गणित हल करने में दो तीन बार का समय लगा। पर हल करके ही दिया। पुस्तक के पीछे भी वही उत्तर था। वह शायद बहुत खुश हो गई थी।

पूजा   एकदम बराबर आया रे उत्तर ! अब आगे का मैं खुद ही कर लूँगी पर यदि नहीं आया तो तेरे पास ही हल कराने आऊँगी, चलेगा न !

जगु   अँ " हाँ आ जाना   मतलब कि—जब फँस जाय तब ! गणित में !

पूजा   पर तू उस कागज पर क्या लिख रहा था ?

जगु अं कुछ नहीं वह ऐसे ही कुछ ‥

पूजा ऐस मतलब ? चिट्ठी लग रही है ? किसे लिख रहा था ? मत बता।

जगु (घबराकर) अरे चिटठी विटठी कुछ नहीं कविता लिख रहा था—

पूजा झूठ मत बोल दिखा न (वह दिखाता है। पूजा जल्दी-जल्दी पढती है) बस इतना ही ?

जगु इतने मे तुम जो आ गई ! कसी लगी ?

पूजा अधूरी है। पूरी तो कर (कहते हुए चली जाती है)

जगु वह आई और चली गई सिर्फ गई नहीं मन पर एक अचानक अजीब एहसास छोडकर चली गई। मन कहने लगा कि उसे गणित न आये और वह

[पूजा पुन आती है।]

पूजा ऐ, अ दर आ सकती हू ?

जगु अरे तू ? आ ना ? अब किस सवाल मे फस गई ?

पूजा (अल्हड की तरह हँसकर) गणित ! उसी दिन वाला।

जगु मतलब ?

पूजा तूने जो हल निकाला साफ गलत हो गया

जगु गलत हो गया ? लेकिन पुस्तक के पीछे तो

पूजा गलत छपा था।

पूजा तेरी कविता पूरी हो गई ? मुझे देखना है

जगु (जेब से निकालकर) हाँ हाँ। ये देख। जरा ध्यान से पढना

[वह पढना शुरु करती है, पढ़ते रहती हैं। जगु उसे खुशी से देखने लगता है, पढकर समाप्त करती है]

जगु कसी लगी ?

पूजा बहुत ही अच्छी है पर बिल्कुल समझी नहीं–

जगु समझी नहीं ? फिर अच्छी व स बोल रही है ?

पूजा सिम्पल बूस्ट देने के लिये।

जगु मैं बताऊँ अथ ?

पूजा तु समझ में आई ? चल बता।

[पूजा उठती है, फ्रीज ।]

जगु मैंने उसे अथ बताया। पर वह तो पूरी की पूरी ट्यूब लाईट थी। सारा अथ उसके सिर पर से चला गया। मैंने और भी कवितायें सुनाई पर रिजल्ट ज़ीरो या ज़ीरो" कुछ भी पल्ले नही पडा उसके। वैसे तो वह कविता के मामले मे बहुत कमजोर थी। पर उसे इस बात की खुशी थी कि मैं कविता लिखता हू। वह मेरी एक कविता को अपने घर लेकर गई। कभी कभार पढने के लिये। उसका खूब हँसना और खूब बोलना—बस यही चद यादें मेरी पास छोड गई।

पूजा ऐ यह ले तेरी पुस्तक। कविता अच्छी लगी। ठीक है, मतलब कुछ नही रे पिताजी को। वह कहने लगे— 'ऐसे लोगों के दिमाग मे कब क्या-क्या आता है ईश्वर को ही मालूम।" पिताजी का भी एक मित्र था कवि, पर सिर्फ कवितायें ही करता रहता था। नौकरी वगरह कुछ नहीं। ऐसे ही भटकता फिरता है। अभी भी मिल जाता है कभी कभार। मतलब देख न, मेरे पिताजी को समझ मे आती है कि नही कविता।

जगु अँ ? अगली बार मैं दूसरी कविता भेज दूँगा।

पूजा ठीक है—(पूजा भाग जाती है)

जगु आनेवाला हर दिन कुछ न कुछ खुशियां लेकर आता था। पहले-पहले सपनो मे चोरी की तरह आन वाली पूजा, अब साक्षात् रोज घर आने लगी थी। मैंने उसे कविता समझाने की कोशिश छोड दी थी, साला अपना एक तो पहला-पहला प्रेम वह भी अव्यक्त प्रेम। पूजा की बात कुछ निराली थी। ऐसा लगने लगा दीनू को मै बताना चाहिये। इस तरह अगर मन ही मन मे दबाकर रखा तो मैं मर ही जाऊगा। लेकिन लेकिन अगर पूजा के दिल म ऐसा कुछ न हुआ तो

तो गजब हो जायेगा। पर फिर निश्चय ही कर लिया कि दीनू को, अपने सबसे करीबी दोस्त को अव्यक्त प्रेम कहानी बताऊँगा ही। साला वह भी जल जायेगा अपनी प्रेम कहानी सुनकर।

[मच म एक ओर से दीनू का प्रवेश, जगु उसे आवाज देता है। दोनो बैठ जाते हैं। जगु अस्वस्थ।]

दीनू जगु मुझे ऐसा लग रहा ह कि तू कुछ कहना चाहता ह।

जगु अँ, हाँ वह क्या है दीनू ? वसे मैंने तो पहले से ही तय किया था पर वह क्या है दीनू शुरुआत कसे करू समझ मे नही आता।

दीनू किसकी शुरुआत ?

जगु अँ ? वही तो कह रहा हू उसका क्या हुआ मालूम है ? नही जाने दे नही नही अब तो जाने ही दे एकदम डॉयरक्ट ही बोलता हू दीनू मैंने, मेरा मतलब मेरा न वह क्या ह न "ऐसा हैं न—

दीनू (जोर से) क्या हुआ ह ?

जगु प्रेम हो गया है —

दीनू तू और प्रेम ?

जगु हाँ, मैं और प्रेम।

दीनू फिर तो कमाल ही हो गया। मतलब सीधा सीधा लफड़ा बोलना।

जगु लफड़ा नही रे वह प्रेम।

दीनू हाँ शुरु शुरु म प्रेम ही लगता है बाद मे ये ग लफड़े म ही होता है। मतलब शादी किया तो भी। लेकिन क्यो रे कौन है वो ? क्या नाम है ?

जगु उसका नाम पर तुझे नाम क्या चाहिये ? मुझे नाम वाम नही बताना है

दीनू फिर बतान की शुरुआत ही क्यों की थी, झक मारने के लिय ? तुम साला लोग सब अधूरा अधूरा ही करत हो

जगु अरे पर नाम म क्या रखा है ?

दीनू वही ता मैं पूछ रहा हू। उसके उसमे क्या है ?

जगु वैसे अब तक बिल्कुल ठीक तरह से देखा नही उसे

दीनू सारा गुड़ गोबर कर दिया। अरे फिर प्रेम किस पर कर रहा है ?

जगु (स्वप्न मुद्रा मे) उसकी नाजुक चालो पर, खिलखिलाकर हँसने पर खूबसूरत बालो पर उसकी तरफ जब देखता हू ता मैं अपने आप तक को भूल जाता हू। मतलब केवल आँखे ही बोलने का काम करती हैं।

दीनू वाह, क्या बात है—

जगु माँ कसम। मैंने अब थोड़ी एस एस सी की गणित की भी तैयारी कर ली है। वसे भी उसकी प्रिलिम शुरू होने वाली है—

दीनू   जगु तू साला मरने दम तक भोंदू ही रहेगा। अरे लेंफड़े तो हमने भी बहुतेरे किये है। लेकिन एक्जामस का चिंता हट। अब तुम जैसे अज्ञानी को मैं ही ट्रेंड कर देता पर अब मैं भी इस फील्ड से रिटायर हो रहा हूँ।

जगु । मतलब ?

दीनू   मेरे बापू ने, बस कुछ ही दिनो मे, दो हाथ के चार हाथ करने की सोच ली है। और घर मे भी सबकी एक राय हो गई है। वैसे मैं तैयार नही था पर लड़की देख डाली और बोल दिया चलो हम तैयार हैं, तब से खड़े हैं एक पैर पर ही शादी के लिये

जगु   कौन खुशनसीब है रे वो ?

दीनू   वही रे, अपने मास्टर साहब की पूजा। उसके पिता ने कहा "उधर बोर्ड की परीक्षा खत्म होते ही इधर शादी के मंडप के बोर्ड पर खड़ा कर देंगे वैसे [illegible], जितने जल्दी हाथ पीले हो उतना ही अच्छा—

[दोनों एकदम फ्रीज होते हैं]

जगु   उस दिन मैं पहली बार जिंदा मरा था। हाँ, इट वाज दि फर्स्ट डैथ आफ देशपांडे—[illegible] धड़कने वाला दिल अचानक बंद हो गया। [illegible] अवानी की चिता जली, और [illegible] हो गया। उस शाम की [illegible] घर कर लिया। [illegible] अपना ही चेहरा [illegible] लगा

एक   बार न हाँ, [illegible]

लोगो की एक भी आदमी कधा बदलवाने तक आता नहीं मतलब क्या हुआ इसका ?

दूसरा — वो मिस्टर तुम्हारा दाहिना कधा है, मेरा भी बायाँ कधा एकदम से नाकाम हो गया है।

पाँचवा — फिर तुम लोग मिच्युअल अण्डरस्टेण्डिंग के साथ कधा क्यो नही बदलते ?

छठवाँ — मतलब ये कि इनका ये दाहिना कधा और उनका बायाँ कधा

एक — देखिये मिस्टर तुम आते हो या नही, कि नीचे रख दू ?

[पीछे से आठ और नौ आते हैं। कधा बदलवा लेते हैं]

देशपाडे — (पहेली वाली ही मुद्रा मे) उसके बाद शादी के मडप में, मैं कब बठा, मुझे खुद पता नही चला। आज भी अपने पडोस मे रहने वाली पूजा अब भी अपनी ही बीवी है, इसका एहसास मुझे कई बार हुआ।

[जगु देशपाडे और उसकी औरत चौपाटी बीच पर बठे है।]

जगु — यहाँ से, सूरज का डूबना कितना अच्छा लगता है न ?

औरत — हूँ

जगु — तुझे सूरज को डूबते देखकर अच्छा लगता है।

औरत — छी

जगू — नही ? 'अरे पगली देख पक्षी कैसे कतारो मे उडे जा रहे है, अपना बसेरा लेने के लिये।' आसमान गहरे नीले रग से रग उठा है।

जगु — और वहाँ देखो, समुद्र की लहरों म कितना जोश उमड आया हैं। कितना मनमुग्ध वातावरण है, है न ?

औरत — यह क्या फिजूल बकवास लगा रखी है। तुम भारा [illegible] लगता है, यूं ही गयी दोग ? मैं तो बोर हो गई हूं ——
(जम्हाई लेती है)

जगु — फिर क्या करें ?

औरत — (अनिच्छा से) खेल खायगें।

जगु — ए कहो न क्या कहना चाहती हो ?

औरत — मुझे कुछ कहना था, अपना माडा का प्राइवेट !

जगु — (अधीर होकर) क्या है वो प्राइवट ?

औरत — हो बाबा ! तुम्हें तो सब कुछ [illegible] है। तुम्हारी कुछ लगाती तो [illegible] कम शादी में मेरी सहेली [illegible] पढो, वह भी आज न आव [illegible] यह किस्सा फिर नहीं होगा [illegible]।

[जगु बेचारे [illegible] होना।]

गई तो सभी पूछने लगे, तुम्हें कितने ? छोटे को साथ नहीं लायी ?
जस उन सबको खबर ही नहीं है। फिर बहन लगी अरे बाप रे बाप, अभी तक एक भी नहीं ? कुरेद-कुरेदकर पूछ रहे थे। यशोदा ने कहा, डाक्टर को दिखाओ ! क्या दिखाये ? मेरा सिर ! गर्भ रुकता ही नहीं तो बच्चा कहाँ से आयगा। अब तो घृणा होने लगी है ऐसे संसार से। ऐसी बदनामी से तो अच्छा है गले में पत्थर बाँधू और

जगु पहली बार लगा यहाँ से उठू और कहीं जाकर जान दे दूँ। पर पैर ही नहीं उठ रहे थे। जस मेरे जीवन की सारी डोर दूसरों के हाथों में थी। खुद पर ही घृणा करता, अन्दर ही अन्दर घुटना और बिना नींद के रात बिताना मौत से भी भयंकर होता है दोस्त ! आज मेरे सभी रास्तों पर ताले लगे थे और उसकी चाबियाँ दूसरों के हाथ में थी। (विराम) घर को भुलाने के लिये आफिस में जाकर बैठ जाता था। साढ़े नौ से शाम छः तक। रजिस्टर पर सही ठोकी कि बस फाईल में ही गड जाता था मैं। साला बगली वाली टेबिल पर बैठने वाला गोखले, हमेशा गप्पें मारता और मिसेज खारकर खारी की तरह हँसता।

तीसरा अब अभी और कितनी दूर है शमशान भूमी

आठवां बस यहाँ से केवल सात मिनट की दूरी पर।

तीसरा यह तो मैं पिछले आधे घण्टे से सुन रहा हूँ।

चौथा क्यों भाई तुम शमशान भूमि के बारे में ही बता रहे हो न ? नहीं नहीं मुझे लगा की हाऊसिंग कोम्पलेक्स की मिटिंग हाल वाली सात मिनट पर

आठवाँ क्यों भाई, डरा गया है मैं ? क्या मैं सो म ट्रीट बोल रहा हूँ म । अरे पिछली बार जब भास्कर राव मरे न तब मैं सात मिनट मे उठकर आया था । डायरेक्ट सो मट ट्रीट ।

चौथा क्यों साला, ठंडे हो गये क्या सारे ! बोलो जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम

सभी जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम

जगु म आई कम इन सर ?

मैनेजर यस कम इन देशपांडे ।

जगु साहब तुम आपन बुलवाया ?

मैनेजर हाँ मैने ही बुलवाया था ।

जगु किस लिए सर ? कुछ मिस्टेक हो गई क्या ? (दर्शकों से) अपनी तो एकदम फट गई थी । सच कहता हूँ, मैं बहुत डरा हुआ था । वैसे भी साहेब की घनी-घनी मूछों से और टॉर्च की तरह चमकने वाली आँखों से मैं बहुत डरता था । इससे पहले, अकेले मैं साहब की केबिन म कभी नही आया था ।

मैनेजर छी छी देशपांडे, मिस्टेक वगैरह कुछ नही । आपको एक गुड न्यूज देनी थी ।

जगु जी ? क्या ? गुड न्यूज

मैनेजर अरे भई ऐसे चौंकिये घबराये मत । हाथ मिलाइये पहले क्षम आन शेक हैंड, प्रमोशन की लिस्ट मे आपका भी नाम है मिस्टर देशपांडे, हम लोग अब आपको प्रमोट करने वाले हैं ।

जगु (खुशी से) सचमुच सर ?

मैनेजर येस, आप ही फाईनलाईज करने वाले हैं । आपके साथ तीन और हैं । रेगे, शुक्ला, और मिसेस विचारे आपको

लगन और इमानदारी का नतीजा है यह मिस्टर देशपांडे कीप इट अप !

जगु सर मैं चलूं ?

मनेजर हाँ, (देशपाडे जाने लगता है,) मिस्टर देशपाडे, गुड लक !

जगु (खुशी से) इतना खुश था कि साहब को भी Thank you बोलना भूल गया। (टेबल के पास जाकर) अरे वो खार-कर वाई, एक खुशखबरी है।

खारकर चाय या कॉफी ?

जगु लिमका।

खारकर वो हो ! अजी शुक्ला यहाँ आइए, गोखले यहाँ आओ, देशपाडे साहब पार्टी दे रहे है।

गोखले क्यो देशपाडे, लडका या लडकी ?

खारकर छी बाबा आपको तो मैनेर्स भी नही। ऐसे यही एकदम डायरेक्ट पूछा जाता है ?

जगु अरे वसा कुछ भी नही है। अभी-अभी मै साहब की केबिन से जाकर आ रहा हूँ मेरा मतलब उन्होने न ही मुझे बुलवाया था

गोखले पर क्यो रे क्या ?

जगु मुझे प्रमोशन मिल रहा है।

गोखले क्या बोल रहा है ?

खारकर कॉगरेच्युलेशन मिस्टर देशपाडे

गोखले अरे इसकी तो मुझे बिल्कुल ही कल्पना भी नहीं थी।

देशपाडे मुझे भी नहीं थी ! चलो यहाँ रोज मर-मर मरता था, उसका कम से कम थोडा फल तो मिल रहा है।

खारकर मिस्टर देशपांडे अब केवल लिमका से काम नही चलेगा।

सभी चलो वही सही। लिमका विथ सम लाइट

जगु (पसीना पोछते हुए) थैंक्यू, खारकर बाई।

[सभी चले जाते हैं।]

जगु (दर्शकों से) बहुत दिनों के बाद एक अच्छी घटना ना घटी साला अभी दो घण्टे भी नहीं बीतें, लगता लगा सल्फ कान्फिडेंस आ रहा है—बड़ा साभर खात-खात मन खार कर बाई को आँख भी मार दी, भगवान कसम। लग रहा था औरत हो तो ऐसी खारकर बाई जसी! वसे कई रातों को मैं अपनी पत्नी को खारकर बाई ही समझता था, वह मजा ही कुछ और था! (रुककर) डॉयलाग बाजी ज्यादा हो रही है शायद? माफ करना। पर क्या करूँ मन पर काबू नहीं रहता है। पर तुरन्त ही की शस हारकर अपनी सीधी राह पर चलने लगता हूँ। पर सच कहता हूँ, प्रमोशन का हैंगओवर उतर ही नहीं रहा था। पत्नी को जब यह बात बताई तो वह उसी समय स्वादिष्ट भोजन बनाने को तयार हो गई। बहुत दिनों के बाद रात अच्छी गुजरी, दूसर दिन सवेरे आफिस म पहुँचा—

प्यून देशपाण्डे आपको साहब न बुलाया है।

जगु (साहब की केबिन म जाकर) यस सर,

मनेजर आइय देशपा ड साहब आइय।

जगु साहब कुछ काम था?

मनेजर हाँ काम हा है। वो क्या हुआ देशपाण्डे वो क्या है कि कल मैंने तुमसे कहा था प्रमोशन के विषय में!

जगु हाँ हाँ—येस सर, फायनालाईज हो गया क्या?

मनेजर हाँ अभी अभी फायनालाईज होकर आया है मतलब

प्राब्लम क्या हुआ कि, बस ही मैंने तुम्हें अभिनंदन किया।

जगु येस सर फिर ?

मनेजर इसमें बुरा मत मानना मि देशपांडे, तुम्हारा नाम कैंसल हो गया है।

जगु (घबराकर) यह क्या कह रहे हैं सर ?

मनेजर युअर नेम इज कैंसल्ड फ्राम दि लिस्ट। अभी-अभी *मिटिंग से आ रहा हू, आई ट्रायड माई लेवल बेस्ट बट,* आपको जी एम के बारे में तो पता ही है, उन्होंने खुद मि गोखले का नाम प्रमोशन लिस्ट में डाल दिया था। अब इस तरह से किसी न किसी का नाम तो लिस्ट में से कैंसल करना ही था। आपको तो पता ही है, रेगे इज सीनियर मोस्ट पर्सन शुक्ला का भी क्लेम था, और एक लेडी भी चाहिए लिस्ट में साहब का आग्रह था, इसीलिये मैं मजबूर हूं। आई एम सॉरी। मिसेज विचारे को रखना ही पड़ेगा। बुरा मत मानना देशपांडे। आपको हुई तकलीफ के कारण मैं शर्मिंदा हू

[मैनेजर बोले चला जा रहा है जगु देशपांडे चुपचाप बाहर निकल जाता है।]

जगु देशपांडे वाज ईंड अगैन एण्ड अगैन—किसी को ऊपर लाने के लिये किसी न किसी को तो खाई में गिरना ही था। और इस किसी के लिये चुना गया मुझे। मिस्टर देशपाण्डे को – बैंटिंग कभी मिली ही नहीं –

जगु नसीब में केवल फील्डिंग ही लिखा था (विराम) बोर हो गये न ? आपको महसूस हो रहा होगा कि मिस्टर

देशपांडे सठिया गया है, है न ? अपने जीवन की कहानी हमे क्यो सुना रहा है। हमारा बहुमूल्य समय नष्ट कर रहा है। आपका कहना सही है। अपन जीवन की पीडा इस तरह कोई ओपाली कहता है क्या ? लेकिन नो आई एम इ जाइग माई डैय। कंध पर कब बोझ पड़ा पता ही नही चला जीवन रूपी शमशान भूमि का—

सभी जयराम श्रीराम, जयराम श्रीराम !

एक चलो शमशान भूमि आ ही गई साली। चलो कोई भी एक डा सर्टिफिकेट लेकर आगे पहुँचे।

तीसरा ठीक है म जाता हूँ—

पाचवा अबे ग र तू मत जा। निकलते वक्त तूने ही कधा दिया था न अब अ दर प्रवेश भी तू ही करना !

तीसरा अ दर मतलब किधर ?

पाचवा अरे गधे की औलाद

सब ओ S S !!

पाचवा अबे मैं उस गधे की औलाद कह रहा हू।

छठा ठीक है मैं आगे चला जाता हू। लड़ाई झगड़ा नहीं। अंत तक तो कम से कम एकता रखो भाई।
(वह आगे निकल जाता है)

दूसरा अरे मि अगरबत्ती आपके पास है न ?

सातवां (पाकिट म टटोलते हुये) हाँ ! है न !

दूसरा मिल रहा है न ?

सातवां पाकेट फटा है न ! जल्दी हाथ म आ नहीं रहा है।
(उसे अगरबत्ती का पकेट मिलता है, फिर शवयात्रा घूमना प्रारभ करती है।)

आठवां अरे रुक जाइये, रुकिये प्रथम पैर की ओर जाना है।

चौथा किस शास्त्र मे लिखा है पहले सिर की ओर से, फिर पैर

आठवां आपको क्या मालूम

चौथा फिर क्या आपको ही सब मालूम है?

आठवां पिछले दस सालों से मैं य धधा कर रहा हू।

चौथा अच्छा-अच्छा लोगो को पहुचाने का?

आठवां शट अप!

चौथा तुम शटअप।

(दोनो झगडे पर उतर आते है छठा दौडकर आता है।)

छठवां अब प्राब्लम हो गया। अब और बैठो आराम से चार घण्ट तक

एक क्या हुआ?

छठवां वह सीमटरी का प्यून मर गया। एकदम अचानक मर गया।

सभी कैसे?

छठवां उसके दोनो कानो के पास इतनी जोर से आवाज लगाई पर वह बदा हिला तक नही।

दूसरा पर मरा किस तरह?

छठवां अब हिल ही नही रहा है, तो क्या समझे?

पाचवा अबे उठ गधे की औलाद! चूतिया चल मेरे साथ—

(दोनो जाते हैं।)

जगु अब इस गडबडी म सबने सब पैर न छुआकर अदर प्रवेश कर गये। ये तो वही हुआ जानेवालो की जान जाये देखने...

वालो का मनोरंजन। और इस मनोरंजन का जिम्मेदार लेखक, अब देखो न निर्दयी ने कितने क्रूर डायलाग लिख डाले है। हिन्दी मसाला फिल्मो की तरह। वैसे इतनी बार मर चुका हू कि यह साक्षात मरना उसके सामने बहुत छोटा लग रहा है। (विराम) मेरा सारा जीवन एक तमाशाई बनकर रह गया। मेरे सपने का दफन कर दिया गया। मार डाली गई मेरी क्रियेटीविटी, गुम हो गई मेरी शांती मेरा जीवन तो किसी गली के मोड पर पडे कचरे की तरह है, जिसके पास म्यु सिपालटी की गाडी कभी नही आती।

जगु पर अब सुनाई देने लगी है मुझ मेरी आवाज शांती की आवाज। उसकी प्रतिध्वनिया मेरे कानो म गुंजने लगी हैं। मेरी औरत को दोहा लगा है। शादी के दस साल बाद नया अंकुर फूटने वाला है। और इधर मैंने आज समाप्त कर दिया है अपना दसवाँ अवतार बस यही एक क्षण था उसी मे समा गई थी मेरी सम्पूर्ण कविता क्रियेटीविटी आकाक्षा सारा तो मुझे सभी न है पर अधूरा अधूरा

पहला (दूसर से) वह अ त के डायलाग बोल रहा है बीच का सीन छोड रहा है वह उसे बताओ।

दूसरा ऐ मिस्टर तुम बीच का भी सीन करना पडेगा।

जगु सचमुच करना होगा क्या ?

सभी हाँ करना ही होगा।

तीसरा येस येस अधूरा अधूरा कुछ भी नहीं चलेगा

औरत और मेरा टाल खाओ मत, डायरेक्ट छलाँग लगाकर।

जगु   सारी सच पूछा जाये तो मुझे उसे छोड़ देना था पर नहीं कुछ भी छोड़ा नहीं जा सकता उस दिन बर्वे मेरे मकान के पास से गुजर रहा था मैंने उसे घर में बुलाया। (बर्वे का प्रवेश) क्या ब बर्वे साले दोस्तों वगैरह भुना दो क्या? पहले-पहले तो बहुत आया करता था। अब अचानक एकदम आना क्या बंद कर दिया? हां?

बर्वे   ग्राउण्ड फ्लोर पर रहता हूं न इसलिये

जगु   चल ताश खेलते है, मडीकाट। वैसे भी आज सनडे है।

बर्वे   नहीं यार?

जगु   अरे आ भी जा!

बर्वे   घर पर तो कोई नहीं हैं न?

जगु   होगा तो भी क्या हुआ? ठीक है चल गप्पे ही मारते हैं।

बर्वे   बहुत दिनों के बाद आज बहुत खुश दिखाई दे रहा है। क्या बात है?

जगु   कुछ नहीं यार कोई बात करनेवाला मिलता ही नहीं आजकल

जगु   और कोई मिल जाये तो क्या बात करू यही समझ मे नही आता। और वैसे भी आज घर पर भी कोई नही हैं बहुत खालीपन सा लग रहा है।

बर्वे   अर वाह! फिर ताश निकाल यार! पहले भी मैंने कई बार कोट चढ़ाय हैं। याद है या नहीं?

जगु   मैं भी चढ़ाऊँगा जरूर एक बार

बर्वे   कमाल है जगु आजकल तुझ एक बार भी मडी नहीं मिली

जगु   एक बार मिली थी, वो भी एस और एक ही कलर की-क्या फायदा?

(इतने में मिसेज देशपांडे का प्रवेश। बर्वे को देख कर आग बबूला हो जाती है।)

औरत — इसे पहले बाहर निकालो! इसे घर में घुसने की इजाजत किसने दी? नीच कहीं का। उठो पहले बाहर करो इसे।

जगु — अरे पर! मैंने ही बुलाया है

मिसेज जगु — आज तो झाड़ू से मारूँगी इसे

जगु — पर किया क्या है इसने?

मिसेज पांडे — उसी से पूछो और सुनकर मुछों पर ताव देना

बर्वे — अरे कुछ नहीं यार मैंने सुबह सुबह सिर्फ पूछा दूध है क्या?

मिसेज औरत — अब छिपाते, शर्म आती है क्या सच बोलने को? तुम क्या सुन रहे हो इसकी अरे इसने मेरे शरीर पर हाथ डाला।

जगु — क्या?

बर्वे — नहीं जगु यार, झूठ है यह सब।

मिसेज पांडे — केवल हाथ ही नहीं डाला-अपनी बांहों में कसकर पकड़ कर रखा था

बर्वे — ये झूठ मत मान दुनियां को दिखाने के लिये।

मिसेज पांडे — अरे देख क्या रहे हो? पकड़ो उसे!

जगु — बर्वे कमीने-नालायक-कीड़े

मिसेज पांडे — तुम सिर्फ चिल्लाते रहो खड़े खड़े। मैं दिखाती हूँ उसे।

(झाड़ू लेती है घर के बाहर वालों लोगों की भीड़ बर्वे भाग जाता है।)

मिसेज पांडे — चूड़ियां पहन लो, चूड़ियां। अरे मैं एक औरत होकर इतना और तुम एक मर्द होकर खड़े रहे बस····

जगु अरे पर अब चिल्ला क्यों रही है ?

मिसेज पाण्डे पत्थरों पर जाकर सिर पटक लो तुमसे अच्छे तो पत्थर हैं। एक पराया आदमी घर में घुसकर आपकी पत्नी पर हाथ डाल देता है और तुम बेचन देखते रहो। नामर्द हो तुम नामर्द

कुछ लोग क्या हुआ भाभी ?

मिसेज पाण्डे मेरा सिर और क्या ? तुम लोग जाओ यहाँ से और इसे भी साथ ले जाओ (रोने लगती है)

जगु (दर्शकों से) उस वक्त मैंने गलती की। मुझे वर्के को कम से कम एक थप्पड़ तो मारना ही चाहिये था। पर नहीं हो सका मुझसे। उसी के बाद घृणा होने लगी खुद से घृणा बिल्डिंग में कानाफूसी होने लगी कि मेरी पत्नी का होनेवाला बच्चा उस वर्के का साला खुद के मुह पर थूका भी नहीं जाता इस मौत को भी मैंने अंत तक सहा है। अंत तक।

(कुछ देर सन्नाटा। इस मूड से बाहर आता है।) पर अब छुटकारा मिला ही क्या है सब झंझटों से मुझे उसका आनेवाला बच्चा जहाँ भी रहे सुखी रहे—अब उसकी चिंता भी मुझे नहीं रही। अब तो पूर्ण समाधान के साथ मैं चिता पर जलने को तैयार हूं।

(सब लोग चिता की तैयारियाँ कर रहे हैं। सातवाँ मटका लेकर चिता के चारों ओर घूम रहा है। पत्थर के सहारे मटके में छेद करता है और पुन घूमने लगता है)

सॉलोमन ग्रंडे सोमवार को जन्म मंगलवार को नामकरण बुधवार को शादी गुरुवार को बीमार

मुनवार को सीरियस शनिवार को मौत रविवार को दफना दिया गया मेन ! दैट वाज दी एण्ड आफ सोलोमन ग्रंडे। जिसके पूरे जीवन में बोलने लायक कुछ भी घटना नहीं घटी वह सालोमन "

तीसरा चलो अब हम नमस्कार कर लो। अग्नि देनी है—

[सब अन्तिम नमस्कार करते हैं। अग्नि देते हैं। चिता जलने लगती है। इतने मे चित्रगुप्त अपने सहयोगी के साथ प्रवेश करता है। उसके हाथ में एक बड़ा रजिस्टर है। पर्दा गिरने लगता है।]

अधिकारी अरे कोई है वहां ? कौन पटन दे रहा है ? नाटक अभी खत्म नहीं हुआ अरे बेवकूफो पर्दा खोलो जल्दी खोलो (पर्दा खुलता है) देशपांडे बैठा है, शेष सभी चले जाते हैं। आप ही माननीय श्री देशपांडे ?

दूसरा जग नाथ देशपांडे ?

जगु हां। क्यो ? आप कौन ?

अधिकारी मैं चित्रगुप्त और यह मेरा सहयोगी।

जगु अरे वाह ! मतलब आप लोग मुझे स्वय लेने आये हैं।

अधिकारी अरे मराया ? आपको जला भी डाला ?

जगु हां, आज मैं बहुत खुश हूं क्यो ?

अधिकारी गलती भयंकर गलती हो गई।

जगु पर हुआ क्या ? मैं जला हूं चलो, ले चलो न, मैंने कभी कोई पाप नहीं किया है। मुझे स्वर्ग मे ले चलो।

अधिकारी देखिये मिस्टर देशपाण्डे अब आप गड़बड़ी मत कीजीये।

जगु गड़बड़ी ? क्यो अब क्या हो गया ?

अधिकारी आप गलती से मरे हैं। आज मरने वालो की लिस्ट में आपका नाम नहीं है।

जगु आप यह क्या उल्टा-सीधा बोल रह है।

अधिकारी हम उल्टा नही बल्कि सीधा सीधा बोल रहे है। आपकी मृत्यु और पतीस साल के बाद है।

जगु नही भई गलती मत किजिय म जगु देशपा ड मर चुका हुं। जल भी चुका हूँ वह देखिय देखिय वह रही मरी राख।

अधिकारी वह तो दिखाई दे रहा है हमे। ज्यादा चतुर बनने की कोशिश मत करो। यमराज का कानून तोडा नही जा सक्ता। हम आपको अपने साथ नही ले जा सक्ते हैं।

जगू फिर?

अधिकारी आपको पुन पथ्वी लोक म जाना हागा।

सहयोगी और पैंतीस साल

जगू ना, नो, ऐसा नही हो सकता। यह झूठ है

अधिकारी अरे वाह साहब, साक्षात ईश्वर की बात को मानने से इन्कार कर रहें है? काफी चालू लगते हैं आप

सहयोगी पथ्वीलोक का है न।

जगू अर पर मैं जाऊँगा कहाँ?

अधिकारी अर हाँ, यह तो एक समस्या हो गयी है। (सहयोगी कान मे कुछ कहता है।) अवश्य रास्ता है, एक माग अवश्य है—अर हम ईश्वर यो ही थोडी कहलाते है? तुम अभी के अभी पृथ्वी लोक मे जाओगे वह भी अपने ही घर मे—आपकी पत्नी को लडका होने वाला है न? चलो अभी के अभी तुरन्त जाओ

जगू नही साहब, नही। मैं आपक पैर पकडकर हाथ जोडता हू भीख माँग रहा हू आपसे, मुझ पुन पथ्वीलोक मत भेजो। एसा मत करो साहब

अधिकारी चलो, हमारी बदनामी मत करवाओ ?

देशपांडे सच कह रहा हू साहब मुझे वहाँ नहीं जाना है मुझ पर उपकार करिये साहब

अधिकारी रूकिय यह एस नही मानेगा।

[दोनो मिलकर देशपांडे को जोर का धक्का देते हैं। वह गोल गोल मच पर नाचने लगता है। धीरे धीरे पाश्व मे एक बच्चे को लोरी सुनाई पडती है।]

जग् (दशको) रुकिय रुकिय साहेबान, यह सब झूठमूठ का ड्रामा है ऐसा कुछ भी नाटक म नही है इस तरह से लेखक ने कुछ भी नही लिखा है झूठा है यह सब अरे कोई तो कटन दो रे कोई तो कटन दो रे नाटक तो पहले ही खत्म हो चुका था। ब द करा यह सब रुकिय कटन प्लीज कटन।

पता
द्वारा स देरी पत्रिका,
सम्पादकीय सहायक
विश्व विनय 403, भागोजीकीर माग
माहीम, बम्बई 400016।

"हाऊँज डेट"

[पर्दा खुलता है। कॉलेज के हॉस्टल के रूम का एक कमरा। टेप रेकार्डर पर अंग्रेजी धुन चल रही है। "अरे हट" "क्या बकरी है," 'नाना की टांग साला," । विनोद शर्मा कह रहा है। उसके पीछे-पीछे घनश्याम, हाथ में पानी का गिलास लेकर भाग दौड़ कर रहा है। सीन में एकदम शांत वातावरण।]

विनोद शर्मा डियर फ्रेण्ड, नमस्कार करने का भी समय नही क्योंकि मैं कोई एम पी, एम एल ए या कॉपरेटर नही, लेखक हूँ। म विनोद शर्मा ! पर समय ऐसा है शर्मा गया,

दुबे खड्डे म।

विनोद शर्मा यू आर राइट। अब देखिय न, कुछ सूझ ही नही रहा है। पूछिये क्यो भाई, पूछिय पूछिये। पिछल दो साला से मैं लगातार, एकांकी लेखन मे इनाम ले रहा हूँ। और अब मैं तीसरा साल, इस साल जीतकर हैट्ट्रीक करना चाहता हू। पर आज जो भी उठता है, नाटक लिखने लगता है, इसलिए यू नो मुझे सालिड आइडिया नहीं मिल रहा है।

दुबे हजार बार कह चुका हूँ जनता से बात मत कर।

मूल मराठी रचनाकार "राजा गावडे"

विनोद — अबे दुब, मेरे दोस्त इसी जनता ने हमारा नाटक सराहा इसलिये तो अपना नाटक प्रथम आया। क्या ? है न ठीक ? हाँ।

दुबे — मूख, महामूख, बेवकूफ और मेरे उच्च बुद्धिदेव गुरुदव, चार पैंट पीस, दो साडी और ललित वार वाली पार्टी, इतना सब करने के बाद हमारा नाटक प्रथम आया, ये भूलना मत। बिल एडजस्ट करते समय कितना भारी पड़ा, खाने के वक्त तो सब, ये लाओ वो लाओ, डबल लाओ, उसमे बर्फ डालकर लाओ हमको बियर ही मगता है। और वाउचर साईन करते समय सबने मुह फेर लिया। अन्त में सेक्रेटरी होने के नाते मुझे हैगओवर होना पड़ा, बेकार का टन आवर साला।

विनोद शर्मा — (अपने ही ख्यालों गुम दुबे का गिलास अपने हाथ मे लेकर) मिल गया, मिल गया।

दुबे — क्या ? पानी मे कचरा ?

विनोद — अबे कचरा नही, आइडिया, सालिड आइडिया मिल गया।

दुबे — जनाब यह गिलास है अगर टूट गया तो हाथ मे घुसगा। और फिर नाटक क्या लिखेगा ? घटा !

विनोद — अबे

दुबे — अ हाँ, दुबे।

विनोद — दुबे बेवकूफ ? मैं तुमसे ही बोल रहा हू, मिस्टर दुबे, सुना तुमने मैं नाटक नही लिखूँगा। अरे एक गिलास टूट जायेगा इसलिये तू कल के एक महान लेखक के मूड का सत्यानाश कर रहा है। मेरी प्रतिमा को राम तेरी गंगा मैली समझा है तू।

दुबे एसा मत बोल बाबा- ऐसा मत बोल, वरना तिवारी सर मुझे गोली मार देगें। अबे एक राज की बात सुन, इस साल पिछले साल से ज्यादा बजट पास करवाया है। मासमस हम अब कुछ करना चाहिये।

विनोद कुछ करना है, इसलिये कुछ भी करूंगा उनमे से मैं नही। मुझे जो अच्छा लगेगा जचेगा वही करूंगा मैं। अच्छा तू ही बता य नाटक लिखकर मुझे क्या मिलता है।

दुबे रायल्टी

विनोद बेवकूफ। मुझे मिलता है (कुछ देर रूककर उसे पकड कर) अबे खिडकी से बाहर देख, जग को प्रकाश देने वाला सूर्य, उसे क्या मिलता है? उस पेड पर बैठकर गाने वाली वह कोयल जाने दे कौआ है हां तो उसे क्या मिलता है? अब यहां से देख हां अरे! ये तो मनू!

[मनू का प्रवेश—उदास चेहरा—गंभीर मुख।]

दुबे क्यो बे मनू! क्या हुआ?

विनोद फॅम फार्म का कुछ प्राब्लम हो गया है क्या?

दुबे पिछले चार-पांच दिनो से देख रहा हूं, जरूर कुछ तो हुआ है इसे।

विनोद ये मनू। अरे कुछ तो बोल यार, घर पर सब ठीक है न? बाप से झगडा करके आया है क्या?

दुबे फिर इस तरह उल्लू की तरह मुंह बनाकर क्यो बैठा है? प्रेम भंग हो गया है क्या?

मनू ऐसे बैठते हैं। प्रेम भंग होने पर?

विनोद मतलब

मनू अरे प्रेम भय ही सही, कम से कम इस बात की खुशी तो होती कि कोई मुझसे भी प्रेम कर रहा है।

दुबे फिर तुझे क्या हो गया है, किस बात की परेशानी है?

मनू परशानी? साला तुम्हारी हो रही है। अर हम तीन साल स एक साथ हैं।

विनोद क्यों नहीं। मतलब तू तेर आलीशान घर पर और हम इस फटीचर हॉस्टल म।

दुबे चल छोड यार घर है तो एक ही कॉलेज म न।

मनू मेरा यह आखिरी साल है।

दुबे हाँ भाई हम तो एक साल और बिताना है।

मनू तुम लोगों ने कभी मेरे मन का विचार किया?

दुबे अरे पर इतन सालो के बाद आज ही याद आया ये सब?

मनू बहुत सहा रे, बहुत सहा पर अब सहा नही जाता।

विनोद क्यो?

मनू कल वह इटर आटस की हिरनी आँखा वाली दीपा

दोनों क्या हुआ र? क्या हुआ उस?

मनू पाडे सर के साथ भाग गई

विनोद उसमे कौनसी नई बात है? मुझे तो दोनों पर पहले से ही शक था।

दुबे लकिन तू क्या शोक मना रहा है? कही तू तो नही मरता था उस पर?

मनू मरता था? अरे पिछले पाँच साल से न जाने कितनो लड़कियों पर मर चुका हू पर हमेशा-नो एण्ट्री। कभी किसी को बाला तक नही।

दोनो क्या र ? क्यो ?

मनू डेआरिंग ही नही हुई साली।

विनोद फिर केवल मर-मर के क्यो मरना ! अब तू भी एक लड़की पटा ले वग।

दुबे किसी से नही जमता है।

मनू ठीक है मुझसे नही जमता, पर कोई लड़की मुझे क्यो नही पटा लेती हर बार लड़के ही क्यो पटाये ! अरे लड़का पटाके देखो तब मालूम पड़ेगा इन लड़कियो को, यह पटाना कितना भारी पड़ता है।

विनोद (धीरे से) दुबे इण्टरेस्टिंग सबजेक्ट।

मनू मेरा भी एक सपना था। कॉलिज छूटते ही रोज शाम जुहू बीच पर किसी लड़की से मुलाकात करने का। और वो 'माँ को शक हो गया है" ऐसा ही रोजाना कहती है, और मैं 'मिया बीबी राजी तो क्या करेगी मा पाजी' कहता रहू। फिर बाहो मे बाहें डालकर समुद्र की लहरो के साथ लोगो की नजरो से बचकर अपने ही प्रेम मे मग्न झूमते रहे। एक नारियल पानी खरीदने का, एक ही। उसका पानी मैं पिऊँ और मलाई वह खाये। और फिर किनारे बैठकर, हवा को भी पता न चले ऐसी गोलमाल बातें करने का। एक सुन्दर गजरा खरीदने का, उसके बालो मे लगाने का सौभाग्य प्राप्त करने का।

दोनों फिर ?

मनू फिर जेब मे पैसा हो तो ऑटोरिक्शा से उसे घर छोड़ने का और खुद बेस्ट की बस से लौटने का। इतना सा छोटा सपना है मेरा, पर वह भी पूरा नही होता ? क्या कभी

है मुझमें। अब माना कि मैं अनिलकपूर या संजयदत्त नहीं पर साला ए के हंगल भी तो नहीं।

मनू - क्लास नहीं मिला पर एग्जाम तो हर साल पास करता हूं, वह भी अच्छे नम्बरों से।

विनोद प्यार में सब अनोखा होता है यार।

मनू क्या अनोखा? यह दुबे समोसे खाता है तब भी नाक बहती रहती है। फिर भी सारा दिन लड़कियों से घिरा रहता है। और तू तू विनोद के बच्चे?

विनोद हम तो रायटर हैं यार! अपनी रायटिंग पर सब फिदा है।

मनू राइटर? यार लाईन सही लिख के बता! अरे तुम लोग भी लड़कियां घुमाते हो तो मनू ने ही कौनसा पाप किया है? अब वो कॉम की वह रीना वर्मा हर आठ दिन के बाद बायफ्रेंड बदलती है। साली वह भी एक दिन के लिये मेरे हिस्से में नहीं आती, हमारी बिल्डिंग की वह रेखा इसी साल जस्ट एस एस सी पास हुई वह भी उस कुत्ते के साथ घूमती है। यह साल बसें बेचन वाले भइये भी औरतें पटाते हैं और साक्षात मनू एकदम कोरा? ईश्वर यह क्या कोई न्याय है? कुछ भी हो, अब मैं लड़की पटाऊंगा बस सोच लिया। निश्चय कर लिया।

दुबे अपने कालेज की।

मनू मिली तो ठीक नहीं तो टेलरिंग कॉलेज की भी चलेगी। लेकिन मैं भी अब सब करूंगा। सारी जालिम दुनिया के सामने उसके कंधों पर हाथ रखकर घूमूंगा। तुम दोनों को भी जलाऊंगा। एक तो साला मैं नौकरी करके कॉलेज

करता हूं इसीलिये सबको जलन होती है। अरे कॉलेजों की लड़कियाँ भी मुझे नहीं देखती? कुछ भी हो मैं लव करूँगा। लड़की पटाऊँगा बस!

दोनों (चिल्लाकर) हाउज़ देट!

(अंधकार!)

(क्रिकेट का स्टेडियम चारों ओर मैच का वातावरण और लोगों की आवाजें मनू हेमा साथ बैठे हैं। विनोद-दुबे कुछ दूर पर सब मैच देख रहे हैं।)

दुबे - येस, हो इज़ आउट।

विनोद क्या कह रहा है?

दुबे : वह देख (उँगली दिखाता है, नीचे की ओर— एक बैंच पर मनू और हेमा बैठे हैं।)

विनोद क्या बात है! मानना पड़ेगा यार, हेमा सहाय को पटाना इज नाट जोक कैसे पटी रे उसको?

मनू होने वाली घटना होकर ही रहती है हेमा। आखिर हम भी किसी से कम नहीं, निश्चय किया और हो गया।

हेमा सहाय (तालियों की गड़गड़ाहट) सुनील ने अपना खाता खोला।

मनू अरे मैं भी अपना खाता खोलता पर किसी ने मुझे इंट्रोड्यूस ही नहीं किया। तकदीर भी क्या चीज है आज सुनील उधर है, और मैं इधर हूं। सोचा भी नहीं था कि एक दिन ऐसा आयेगा, देख, देख अभी भी साले की पुरानी आदत नहीं गई, इसी शॉट पर वह हमेशा आउट होता था।

हेमा सहाय - यानि?

मनू अब यानि क्या ? जस्ट हम हॉफपैंट पहनना सीख रहे थे, उस वक्त सुनील और मैं गैलेरी में खेलते थे। बाहर स्टैण्ड।

हेमा सहाय सचमुच।

मनू सचमुच क्या ? सुनील हमेशा पहली बॉल का मेहमान, नर्वस होता था बेचारा, बहुत बुरा लगता था मुझे।

हेमा सहाय फिर ?

मनू फिर क्या ? बुरा लगता था, दया आती थी और उसे पुन खेलने का मौका देते थे।

हेमा सहाय (आश्चय से देखते हुये) मनू, मेरा इण्ट्रो दे न सुनील से।

मनू लेकिन

हेमा सहाय एसा न कर मनू।

मनू वैसा नहीं है लेकिन

हेमा सहाय लेकिन वेकिन कुछ नहीं, मेरी पहचान सुनील से करानी पड़ेगी वह भी आज के आज ही आज मैं बहुत खुश हूँ।

मनू खुश !

हेमा सहाय हाँ। सुनील की और मेरे मनू की दोस्ती है इसलिये।

मनू। दोस्ती बराबर गो ह ता थी।

हेमा सहाय थी।

मनू हाँ हेमा थी। अब नहीं।

हेमा सहाय क्या ?

मनू क्या हाँ वह क्या है हेमा सुनील ने बहुत कप में जो परफोरम स किया था न इण्डिया से लौटने के बा" ..र उसे खूब सुनाया। तब से मयग है। तब से मेरे सामने खड़ा भी नहीं रहता। अगर सामने से गुजर भी गया तो

गर्दन नीचे कर लेता है पर मेरी ओर आँख उठाकर देखता तक नहीं मुझे भी बुरा लग रहा है पर क्या करूँ होने वाली बात होकर रहती है। ओवर पिच बॉल है प्यारे, फ्रन्ट फुट पर खेल

हेमा सहाय मनू तुझे क्रिकेट का काफी ज्ञान है। तू अपने कॉलेज की टीम से क्यों नहीं खेलता।

मनू पालिटिक्स बहुत ही गंदी राजनीति खेली जाती है। अब सही मायने में देखा जाय तो मैं मिडिलर आर्डर बैटसमैन, पर वह मुझे ओपनिंग में ही भेजकर बलि का बकरा बनाना चाहते हैं। आई हेट दिस पालिटिक्स, इससे तो अपना जिम खाना ही अच्छा है।

हेमा सहाय : ए मनू मैं आऊंगी तेरा गेम देखने। कब है मैच ?

मनू इस साल तो खाम। हम पहले ही राऊंड में हार गये। अर्थात मैं खेला नहीं उस समय बीमार था ...

हेमा सहाय क्या हुआ था ?

मनू किसे ?

हेमा सहाय तू बीमार था न !

मनू हाँ हाँ याद आया बेड पच हुआ था।

हेमा सहाय वह क्या होता है ?

मनू बेड पच नहीं मालूम, बेड पच नहीं मालूम, मुझे क्या मालूम है ? वह केवल क्रिकेट वालों को ही होता है।

हेमा सहाय कौन सी बीमारी है यह ?

मनू बीमारी ? हाँ, हेमा बेड पच हुआ न तो पैड नहीं पहन सकते, मैच खेला नहीं जा सकता ! टैराफिक...
(तालियों की गड़गड़ाहट)

हेमा सहाय आज दिलीप बहुत अच्छा खेल रहा है।

मनू कौन ये दिलीप गावस्कर। इनफ्लुए स का घोडा।

हेमा सहाय ऐसा मत बोल मनू। उसी ने तो हमारे कालेज को फाईनल जितावर दिया, दख देख पहली रणजी मच मे खेल रहा है वह। अगले साल के टेस्ट मच के लिय तो फिक्स (तालियो की गडगडाहट)

वॉव दिलीप की सेन्चुरी हो गई। म अभी आटोग्राफ लेकर आती हू। (दौडकर विंग म चली जाती है)

[अ धकार ! पुन होस्टल का सीन]

मनू आटोग्राफ लेने गई और किस लेकर लौटी। वो भी पूरे पब्लिक के सामने। मैं तो निम्का की बोटल ही मारने वाला था पर उसने हलमेट पहना था।

विनोद गुस्सा करके कुछ फायदा होगा क्या?

मनू अब गुस्सा भी नही करू तो क्या करु। जिदगी मे पहली वार लडकी पटाई वो भी कितनी मेहनत करके।

दुबे लेकिन इन्टोडक्शन कराते समय मैंन कहा था कि वह क्रिकेट की बहुत दीवानी है।

मनू उसी दीवानेपन का फायदा लेकर झूठ बोलकर तो मैंने उसे पटाया।

दुबे साले हमने भी क्या तुझे मदद नही की। पिछले दो महीने से क्रिकेट की सभी किताबें लाकर दी।

विनोद बुक स्टाल वाले को पैसे भी नहीं चुकाय अब तक।

मनू पर बहुत भारी पडता है झूट बोलते वक्त। अरे मरे बाप न कभी कपट के बॉल स क्रिकेट नही खेला और उसके साथ ता पेवर सकस तक की बातें करनी पड़ती है।

विनोद पर उसे घुमा तो रहा है न ?

दुबे पिछले दो महीनों से मजा कर रहा है।

मनू बिन खाये पीये सात-सात घण्टे स्टेडियम मे बैठने मे मजा है ? केले के छिलके, प्लेट-गिलास और फल के छिलके पीठ पर झेलने मे मजा है ? क्यो बे दुबे ?

विनोद फोरगेट ईट यार। अगर लडकी चाहिये तो बहुत कुछ सहन करना पडता है।

मनू कर रहा हू यार सब सहन ही तो कर रहा हू। पर सहनशक्ति की भी कुछ लिमिट होती है। अब तुझे तो यह नाटक के डायलॉग लगेगे। पर सच कहू मै उसे दिल की गहराइयो से प्रेम करने लगा हूँ।

दुबे जैसे शाहजहा ने ताजमहल से किया था।

मनू यह तुझे बताकर भी यकीन नहीं होगा विनोद जी।

विनोद यकीन हो गया मुझे। कितने सालो के बाद आज तूने मुझे विनोद जी कहा है।

मनू तुम दोनो की कसम, माँ कसम वह भी उतना ही मुझसे प्रेम करती है रे।

विनोद यकीन हो गया रे।

मनू लेकिन मेरा दिल जल रहा है।

दुबे एक अठन्नी दे।

मनू क्यो ?

दुबे फायरब्रिगेड वालो को फोन करके आता हूँ।

मनू मजाक मत करो यारो, जमाना बडा जालिम हो गया है।

विनोद अब रुकावट काहे की है ?

मनू क्या कहूं ? क्रिकेट के अलावा दूसरी बात करने ही नहीं देती। उसकी एक ही रट है तोष क्रिकेट, शरीर क्रिकेट, यहाँ तक की भगवान की पूजा को भी क्रिकेट।

विनोद अब

दुबे गलत, दुबे, ।

मनू पता है जब उसने दिलीप गावस्कर का किस लिया उस दिन तो साला मेरा फ्यूज ही उड़ गया था।

दुबे यू आर लकी।

मनू क्या ?

दुबे बेवकूफ तेरे प्रेम मे कम से कम कोई विलन तो है।

विनोद सच कहा जाय तो यह तेरी टेस्ट की घड़ी है।

मनू टेस्ट की घड़ी हो या रणजी हो, मैं आज सबकुछ कह दूंगा बस। मैं उसे साफ-साफ कह दूंगा कि मैं तुमसे

विनोद जल्दीबाजी मत कर। बेकार म गड़बड़ कर डालेगा।

दुबे देख यार हम तेरे साथ मदद करने को तयार हैं पर समय आने दे।

मनू नहीं यारो, नहीं-आज रिजल्ट लगकर ही रहेगा। साला सोच-सोचकर टीचर बनने का समय आ गया। पिछले आठ दिन से काम पर नही गया, कॉलेज की गुटली मारी, रातो को नींद नही सिर्फ करवटें बदलता रहता हूँ। इसलिये कल रात बाप ने मेरा बिस्तर गैलरी में फेंक दिया। इतना परेशान हो गया कि कल रात देसी पी, वो भी गवनमेण्ट की। इसलिये अब सोच लिया कि आज फैसला होकर ही रहेगा। दूध का दूध, पानी का पानी ”

दोनों एक साथ बी केयरफुल अपना ख्याल रखना।

मनू नथिंग इइग दूध का दूध पानी का पानी ।

[अंधकार] [बाग का दृश्य । हेमा चहल कदमी कर रही है । शायद मनू की प्रतीक्षा कर रही है । बेंच पर बैठती है । मनु का प्रवेश]

हेमा सहाय अरे मनु, क्या बात है ? लगता है रात भर सोये नहीं । आंखें भी लाल भडक हैं ।

मनू आज सुबह सुबह झगडा हो गया इसलिये ।

हेमा सहाय झगडा ? किसके साथ ?

मनू भईय के साथ, साला दूध मे पानी डालता है ।

हेमा सहाय और यह क्या मनु । अब तक साढे पांच भी नहीं बजे, हमेशा की तरह लेट स्विंग होगा इसलिये मैं बेखबर थी तो आज पांच पच्चीस को आकर तूने याक कर दिया । तुम्हारी स्पीड अब बढने लगी है हां ?

मनू मेरी स्पीड जो थी वही है । तुम्हारी एच एम टी घडी खराब है । पौने छे बजे है, सामने वाली घण्टा घरवाली घडी मे देख लो ।

हेमा सहाय वह युनिवर्सिटी का है, उस पर मत जा !

मनू कुछ भी मत बोल, इतना विशाल राजाबाई टावर उस पर मैं कैसे जाऊंगा ? बफार मे पैर फिसल गया तो

हेमा सहाय पहले ही ओवर मे बॉलर का लय मिली नहीं इसलिये बैटसमैन का कैसे भी स्ट्रोक नहीं मारना चाहिये । टैस्ट मैच पांच दिन का होता है । पेशंस से बॅटिंग करनी चाहिये ।

मनू पर कभी कभी बरसात होती है न ।

हेमा सहाय तू कितना भी आऊट ऑफ द ऑफ स्टंप बोलेगा तो भी मैं मेरी विकेट नहीं गिरने दूंगी । तुम्हारे हृदय के पिच

पर मुझे स्कोर बनाना है। फिर वह मैच हो या ट्रेनिंग मैच हो। मैं एक एण्ड पकड़कर रखूंगी।

मनू उस समय तक क्या मैं फिल्डिंग करूं ? 12th मैन की तरह ?

हेमा सहाय नहीं रे मनू जल्द ही तुझे क्लोज इन का बुलावा आने वाला है। मैंने अपने डैडी को सब बता दिया है। विश्वास रख आने वाले बरसात से पहले शादी का शिड्यूल चॉक आऊट किया जायगा। हनीमून का दौरा जरूर होगा। तू पैड पहनकर तैयार रहना।

मनू पैड ? सिर्फ पैड ? हैंडग्लाऊज नहीं चाहिये। पैड बांधकर तैयार रहना कहती हो। अरे तुझे पति चाहिये या नाइट वाचमैन। शादी ब्याह में सेहरा बांधा जाता है, पैड नहीं। हां हो सकता है इगलैंड में बांधा जाता होगा उनका भरोसा नहीं है न कुछ भी करते हैं। पैड राइट राइट यु आर राइट।

हेमा सहाय गुस्सा मत कर मनू मैंने जानबूझकर बाऊंसर नहीं डाला। बोलने का रनअप गलत हो गया, शब्द फिसला और बाऊंस हुआ। तेरी कसम मनू, इसके बाद मेरी एक भी डिलेवरी से तुझे तकलीफ नहीं होगी और अगर हुई भी तो खुद रेस्ट लूंगी।

मनू हेमा मैं कुछ और कहने आया हूँ। शांती से सुनोगी ?

हेमा सहाय अच्छी बॅटसमॅन बम्पर से डरता नहीं।

मनू शायद तुम्हें अच्छा न लगे।

हेमा सहाय । क्या फर्क पड़ता है। अगर बॅट बॅट पर आई तो हुक करके

सिक्स मार देना या फिर थोडा नीचे झुककर छोड देना।

मनू हमारी शादी हो क्या ऐसा नही लगता तुम्ह ?

हेमा सहाय ऐसी गुगली मत फेंक मन। मेरे जीवन से इस तरह रन आउट होगा तो मुझे स्टेण्ड कौन देगा। मुझे छोडकर मत जा। मैं पागल हो जाऊगी किसी भी समय किसी की बॉल पर, किसी भी जगह मेरा कच हो जायेगा। मैंने माना कि मेरा जीवन, एक लिमिटेड ओवर मच है। परतु सबके सब ओवस तुम अकेले को ही फकने पडेगें। मेडेन होगा तो भी चलेगा। तू चाहे तो मुझ क्लीन बोल्ड कर, मगर इस तरह इनजड मतकर।

मनू तो फिर जो मैं कहूगा आज सुनना ही होगा।

हेमा सहाय तू केवल उगली ऊपर कर। मैं किसी भी प्रकार का विरोध न करते हुये सीधे प्यार के पवेलियन म चली जाऊँगी।

मनू अपनी शादी के विषय मे तुम्हारे डैडी से मिलना चाहता हू।

हेमा सहाय मान्य है मनू मुझे मान्य है। मेरे मायके के टॉस को हारकर मैं ससुराल की फिलडिंग करूगी। मेरे दिल के स्टेडियम मे तेरे पूज्य आडियस होगे। तुम्हारे तनख्वाह की स्टैटिटक्स रखूगी। तुम्हारा हर इन्क्रीमेण्ट मेरी सेंच्युरी होगी। तेरा बोनस मेरा पसनल रिकाड होगा, तेरा प्रमोशन मेरा वल्ड रिकाड होगा। मेरा ससार यही मेरा क्रिकेट होगा।

मनू देखो हेमा, नवम्बर में मुझे प्लाट का पजेशन मिल रहा है, इसलिये दिसम्बर म शादी करेगें।

हेमा सहाय — रियली ! यू आर ग्रेट मनू, यू आर ग्रेट हनीमून को कहां जायेंगे ?

मनू — तुम जहां कहोगी वहां।

हेमा सहाय — दिल्ली जायेंगे, नये साल के शुरूआत से ही पहली जनवरी को ही निकल पड़ेंगे।

मनू — पहली जनवरी ठीक है, पर दिल्ली ही क्यों ?

हेमा सहाय — क्योंकि क्योंकि वहां जाने से वहां जाने से पांचवा क्रिकेट टेस्ट देखने को मिलेगा। कितना मजा आयेगा।

मनू — (गुस्से से) हां हां क्यों नहीं बहुत मजा आयेगा। और हम एक पार्टी भी करेंगे अपने हनीमून में चीफगेस्ट के लिये इमरान खान को बुलायेंगे बस।

हेमा सहाय — मनू मजाक मत कर।

मनु — क्या-क्यों और जब पहली ही इनिंग में हमारा लड़का होगा तो उसका नाम रखेंगे बट तुरंत फोनोआन सेकेण्ड इनिंग लड़की नाम वाल

हेमा सहाय — देख मनू अब मजाक बंद कर।

मनु — हेमा आज तक मैं सचमुच तुमसे मजाक करता रहा उसके लिये मैं माफी मांगता हूं। मुझे सचमुच क्रिकेट खेलना नहीं आता, सिर्फ तुम्हारा प्यार पाने के लिये अब तक मैं तुमसे झूठ बोलता रहा हेमा आज से क्रिकेट टॉपिक हमेशा के लिये बन्द। पिछले चार महीनों से तुम्हारे इस क्रिकेट ने मेरा इतना सिर फिरा दिया है कि रास्ते में चलते समय भी कट लेट कट, स्क्वेट करता रहता हूं। आजकल तो रात को एक सपना आता है कि मैं कानपुर स्टेडियम में भाग रहा हूं और एक मोटा राक्षस बैट लेकर

मुझे मारने के लिये मेरे पीछे आ रहा है। मुझे मार रहा है और मैं कभी इस्ट स्टण्ड मे कभी वेस्ट स्टण्ड म दौड रहा हू। इसलिये अब प्लीज नो मोर क्रिकेट। मुझे समझने की कोशिश करो हेमा। आफ्टर आल एवरी थिंग इज फेयर इन लव एण्ड वार।

हेमा सहाय तू भी मुझे माफ कर मनू।

मनु मतलब तुम्हे भी क्रिकेट अच्छा नही लगता

हेमा सहाय नही क्रिकेट मुझे अच्छा लगता है बहुत अच्छा लगता है।

मनू फिर माफी किस लिये ?

हेमा सहाय अब तक तुम्हें अन्धेरे मे रखा, तुम्हें फसाया, तुम्हारे साथ प्रेम का नाटक किया इसलिये।

मनू (चिल्लाकर) व्हाट ?

हेमा सहाय येस मनू। मैंने तुमसे कभी प्यार नही किया। मेरा प्यार है क्रिकेट पर। वह भी सुदर गेम खेलने वाले दिलीप गावस्कर से। अब जिस तरह तुम मुझे पाने का उपाय कर रहे थे उस तरह मैं दिलीप को पाने के सपने देख रही थी, अन्त मे केवल तुम्हारे कारण ही मुझे सफलता मिली। मैंने तुम्हे अपना आधार बनाया। क्योंकि दिलीप से कैसे बोलू गी इसकी रिहर्सल तुम्हारे साथ करती रही और मैं सफल हो गई। अगले महीने ही हमारी एगेजमेंट है। तुम आओगे तो दिलीप को अच्छा लगेगा। सकोच मत करना क्योंकि मैंने तुम्हारे बारे मे सब कुछ उसे बता दिया है और उसने भी बहुत लाईटली लिया है। अजीब बात तो यह है कि उसने भी हँसते-हँसते बोला—एवरी

थिंग इज फेयर इन लव एंड वार। ओ के। बाय बाय मनू।

[हेमा चली जाती है।]

मनू [स्वतंत्र सेना की तरह] वेल इन 1980 व्हेन आई प्लेड अगेंस्ट पाकिस्तान। नो नो प्लीज। ओफ ! हैल विद दीज फोटोग्राफर्स। ओह श्योर बेबी ओ के ! वल्र्ड रिकार्ड इन इण्डिया नाउ ए रेंज। (हंसता है) बिहाइण्ड एवरी सक्सेसफुल मैन देयर इज ए वुमैन। नहीं तो इतना अच्छा गेम मैं कभी नहीं खेल पाता। येस आई एम प्राउड आफ हर। मेरे यश में उसका भी हाथ है। अरे हेमा, देख तो कौन आया है। यही वह क्रिकेट का बादशाह जावेद मियादाद। आइये न सर, मैं अपने आपको बहुत खुशनसीब मानता हूं जो आप जैसा महान खिलाड़ी हमारे घर आया। ओ हां क्या बात है कपिल, सन्नी, रिचर्डस, बाथम, जहीर, शास्त्री, सदीप बठो-बैठो यार और यह क्या तुम बाहर खड़े हो थामसन। नसीब ! नहीं दोस्त तुमसे मुझे कोई दुश्मनी नहीं है। नसीब ! इतना बुरा मत मान यार, बस बस, हंसना, देख-देख हेमा भी हंस रही है। हेमा हेमा एक्सक्यूज मी। तुम सबको एक साथ देखकर शायद घबरा गई है। अब आप ही देखिये न हमेशा टी वी और अखबारों में आने वाले लोग साक्षात हमारे घर में आ गये। उसे अब भी यकीन नहीं हो रहा है। हेमा-हेमा-हेमा-(चिल्लाकर विंग की ओर भागता है)

विनोद दोस्तो, इस शाक के बाद मनू अपने आप को संभाल न सका, उसका पागलपन हेमा के नाम के साथ बढ़ता ही गया और एक दिन

[सडक पर शोर, बस को ब्रेक, भीडभाड]

विनोद रास्ते पर दौडते समय बस के नीचे आ गया। सारा गेम खत्म। यदि हम लोगो ने उसे उकसाया न होता तो शायद य घटना न होती। इस सबके जिम्मेदार हमी लोग है। शायद आठ महीन हा गय इस घटना को हुवे

[दूसरी ओर से हेमा और मनू का प्रवेश]

मनू आठ कैस ? सात हुय होगे।

हेमा सहाय तुम पुरुषों को क्या मालूम पडता है। आठ ही हुये हैं।

मनू आठ। यानि हमारी शादी होकर छह महीने हो गये होगे क्योंकि उसके पहले के दो महीन तो

हेमा सहाय याद मत दिलाओ बात पुरानी

विनोद दोस्तो कैसा लगा अब ये नाटक। चौका दिया न आप सबको। आप लोगो को लग रहा होगा कि मैंने झूठ क्यो बोला। क्या करे साहब हटट्रीक करना था। नाटक म जीतन के लिये तो सेड मोड जरूरी था। अब हकीकत यह है कि नाटक का मनू मेरे लेखन का काल्पनिक मनू था। और यह एकदम हकीकत का मनू ह। जीता जागता। एक कोरी सच्चाई

मनू अबे विनोद कहा चला गया भाई।

विनोद तो दोस्तो मरा हुआ मनू नाटक का था और यह हमारा असली मनू। वास्तविक जीवन का मनू।

मनू इसमे कोई नई बात थोड ही है। कालेज के जमाने से ऐसा ही होता आ रहा है नाटक य लिखता है और ट्राफी मैं मारता हू।

[अन्धकार। पर्दा। समाप्त।]

पता
द्वारा, भारतीय स्टेट बैंक,
नरीमन पाइंट, बम्बई

"पॉईट ऑफ नो रिटर्न"

[पर्दा अब तक बन्द है।

टेप रैकाडर पर अनाउसमेंट शुरू होती है।]

चिनाय कॉलिज प्रस्तुत—"पाइट ऑफ नो रिटन"

अंग्रेजी लेखक—मररोनाल्ड वाटर

हिन्दी रूपांतरण—समीर अहमद चौधरी

दिग्दर्शन परिकल्पना—लाड डोरोथ वाल्की

सह निर्देशक—रामकृष्ण गाडगील

प्रकाश परिकल्पना—मायकल प्रोक्टर एवं इस्माईल पारकर

वेशभूषा—भानू अथैया

संगीत—आमित देसाई

[पर्दा खुलने लगता है। अनाउसमेंण्ट आगे चल रही है। रंगमंच पर कोई नेपथ्य नहीं। मंच पर प्रकाश बहुत कम है। मंच पर पीछे की ओर बारह कुर्सिया हैं। कुछ क्षण बाद, एक आदमी जिसका नाम 'अ' है, जेब से चिट्ठी निकालकर, हाथ में लेकर, मंच के मध्य भाग पर आकर खड़ा होता है।

टेप रकाडर पर भूमिका—कपिल मुखर्जी, रूपल मिश्रा, मिस वदना पाटिल" चिनॉय कॉलेज के अन्य इक्कीस कलाकार!

अ - टेप बन्द करो प्लीज प्लीज।

मूल मराठी रचनाकार "विजय मोडकर"

]

[चिट्ठी खोलता है। पता साफ करते हुये चिट्ठी पढ़ने का प्रयत्न करता है। हाथ की चिट्ठी खुली है। शायद उसे भूलने का भय है। इसलिए म भूलने की तयारी मे चिट्ठी खोलकर रखता है।]

अ नमस्कार दर्शको। अभी-अभी कुछ देर पहले जिस नाटक का अनाउसमेंट हुआ है। यह नाटक किसी कारणवश हम पेश करने मे असमर्थ हैं। यही कहने के लिये मैं यहां आपके सामने आया था।

[उसी समय दर्शको मे से एक आदमी जिसका नाम "ब" है जोर से चिल्लाता है।]

ब रुकिये, एक मिनिट

[स्टेज की ओर आने लगता है। "अ" नर्वस होकर पसीना पोंछने लगता है, कागज पुन पढ़ने लगता है, तब तक "ब" मंच पर पहुँच चुका है।]

अ मैं मेरी ओर से और चिनॉय की ओर से सभी दर्शको एवं परीक्षको का, और इस प्रतियोगिता के सचालकों से सखेद

ब तुम मांफी माग रहे हो ?

अ (चेहरे पर नम्रता लाते हुये) अर्थात मांगनी ही पड़ेगी

ब उससे क्या होगा ?

अ क्या होगा ?

ब सिर्फ माफी मांगने से ही छुटकारा नहीं मिल जाता मिस्टर।

अ लेकिन हमारी साइड

ब कौनसी ? वही कुछ कारणो वाली ?

[

अ ओं ? हां कारणों वाली ही।

ब कठिन होगी पर सीक्रेट तो नहीं न ?

अ नही सही पर आपसे मतलब, आप हैं कौन ?

ब मैं, चिनॉय कॉलेज का एक शुभचिंतक। पिछले दस साल के इतिहास म चिनॉय कॉलेज मे ऐसी घटना कभी नही घटी।

अ सच है।

ब प्रतियोगिता के नियमानुसार एक बार खुला यह पर्दा चालीस से पचास मिनट के बाद ही गिरता है। उस समय तक खुला हुआ यह पर्दा यानि चिनॉय की सरेबाजार खुली हुई इज्जत और यह म च, जसे कब्रस्तान म फला हुआ प्रकाश चिनॉय कॉलेज की कीर्ति को अधेरो मे फसाकर चालीस मिनट तक रखेगा। चालीस मिनट ?

अ मानता हूँ पर इसके अलावा अब कोई रास्ता भी तो नहीं।

ब तुम सहन कर सकोगे ?

अ नही कभी नहीं। मैं ऐसे ही घर चला जाऊगा। मतलब जा ही रहा हू।

ब (रास्ता रोककर) लकिन कुछ तो पता चले हो सकता है, मैं यहीं खडे खडे कोई रास्ता सुझा सकू। देखिय, इसान की इज्जत और सस्था की इज्जत दोनो अलग अलग बातें हैं।

अ आपका कहना सही है और मैं समझ भी रहा हू।

[थोडा विचार करके दशकों से]

कल हमारे कॉलेज हॉल मे पाइट आफ नो रिटन की ग्राण्ड रिहसल थी। वहा लखक और निर्देशक की आपस

]

मे तू तू मैं मैं हो गई। एकांकी के इंटर प्रिटेशन पर वाद विवाद हो गया। खुद ही लेखक

ब मन्चन, परमीशन कैंसल करने के लिये अपना पत्र आयोजकों को दे दिया। अब ऐसी हालत में तो ''

ब आपकी तैयारी है ?

अ • वही एकांकी ''?

ब अँ ? नहीं, कोई दूसरी, मजा आयेगा, जस्ट फॉर थ्रील।

अ . नहीं बाबा। मैं कोई हमेशा नाटक में काम करने वाला कलाकार नहीं हूं। हाँ कभी जरूरत पड़ गई तो''''

ब (कलाई की घड़ी देखकर) केवल 35 मिनट का तो सवाल है।

अ नहीं, नहीं ''मैं घर जल्दी लौटूँगा कहके आया हूँ।

ब देखा जाये तो 35 मिनट आप और देर से जायेंगे पर संस्था के लिये

अ • अरे, पर स्क्रिप्ट नहीं है, डायलाग नहीं है। भूमिका का पता ठिकाना नहीं है।

ब स्क्रिप्ट इम्प्रूवाइज करेंगे—डायलॉग सूझे वह—पर भूमिका जो हिस्से में आयेगी वह—मजा आयेगा।

अ (नर्वस होकर) पर कैसे होगा ?

ब वह मुझ पर छोड़ दो (घड़ी देखकर) अभी 33 मिनिट का समय है हमारे पास।

अ . (अपनी घड़ी देखते हुये) नहीं। 37 मिनट है।

ब नहीं यार नहीं ! टू बी एक्जेक्ट (घड़ी देखता है) 32½ मिनट है।

अ (पुनः घड़ी देखकर) नहीं, नहीं मेरी घड़ी के अनुसार 37 मिनट तो हैं ही।

अ हमने ऐसा किया तो ?
आ कैसा ?
ब इससे अच्छा हम एक दूसरे की घडी बदल लें ।
अ मगर उससे क्या फर्क पडेगा ?
ब मतलब मैं कहूंगा 37 मिनट, तुम कहोगे 32½ मिनट ।
अ हटो यार यह बेवकूफी होगी ।
ब झंझट क्यों ? हम द ही स पूंछ्त हे ।
(विंग मे खड प्रतियोगिता के आयोजक से)
ब क्यो भाई कितने हुये ? [(अ दर से) इक्कतीस] लो—अब और सुनो ।
अ पर उनकी घडी कैसे ठीक होगी ?
ब हो या ना हो, उसी को अब सही मानकर हम चलना होगा । क्योंकि उ ही की घडी के अनुसार चालीस मिनट प बाद ही यह पर्दा गिरेगा । चलो शुरू करें ?
अ अरे पर मुझस नहीं होगा ?
ब डा ट करो मै जो हू तुम्हारे साथ ।
[इतन म अ' जेब से रूमाल निकालता है, पसीना साफ करता है] ठीक है ?
ब (चुटकी बजाकर) आबुलाल ।
अ आ बु लाल ?
ब और याद नही आ रहा है ? (कटार आवाज म) आबुलाल
अ (सही है) इसी तरह चाबुलाल ?
ब बाद की ?
अ टाबूलाल"

ब राईट !! शिवजी ?

अ (गणित का उत्तर मिलने वाला आनन्द) कोतवाल !

ब मुर्गी ? (अब एक रस्सी पकड़कर)

अ अण्डा।

ब मुर्गी के अण्डे बावन ?

अ उस पर बैठा कौन ? तू या मैं !

ब जो बैठने वाला निकलेगा वह रावण। (हँसता है)

[दोनों हँसना शुरू करते हैं]

['ब' कुर्सियाँ लगाता है उनके जरिये कुँआ बनाता है नेपथ्य लगाते समय नीचे लिखी पंक्तियाँ भी बोलता जा रहा है।]

ब आपने मुझे पहचाना ?

अ नहीं भाई तुमने अपना नाम कहाँ बताया ? मैंने पूछा भी था। अरे, पर यह क्या कर रहे हो ?

ब बहुत जल्द पहचान जाओगे—जो कर रहा हूँ वह—और मुझे भी—तुम पहचानने की कोशिश करो। दिमाग पर जरा जोर दो।

अ (याद करते हुए) उँ, याद नहीं आता (घड़ी देखकर) अब 26 मिनट ही रह गये हैं।

ब वह भी कम पड़ेंगे एक-एक कहानी से पर्दा उठने के लिये

अ ऐसा ही लग रहा है।

ब (कुँआ तैयार करता है)

ब झुक-झुक उसको सलाम करें,
सब सुबह शाम का मेला है,

शाम सवेरे जाकर झुके,
उसका नाम पहला है।

अ (जल्दी से) कुँआ।

ब दौडते रहता है पर घोडा नही

अ आगे का मत बता गाडी जिस पर चलती है वह—रास्ता
राईट ?

ब एकदम राईट। चल आगे बता ?

अ कौन सा ?

ब शहर से दूर
मस्ती म चूर
सुबह सुबह लाली,
सारे दिन हरियाली,

अ (आन द से) गाँव ऽ ऽ ऽ !

[दोनो हँसना शुरू करते हैं। दोनो की अवस्था अब आठ-आठ साल के बच्चे जैसी हो जाती है। गले मे तख्ती लटका कर स्कूल जा रहे है]

ब (बच्चे की तरह) अब हम स्कूल के मित्र तुम्हें कहानी का पता चले इसलिये पहले मैं तुम्हारी भूमिका करूँगा, बाद मे तुम्हें अपनी भूमिका स्वय करना। समझे ?

अ ऐसा मत बोल। समझे एसा बोल,

ब ओह नाईस समझे ऐ। रघुआ रुक। (कधा पकडकर खीचता है) अपनी स्लेट मुझे दे।

अ लेकिन मेरी स्लेट पर तो पाठ लिखा है।

ब इसीलिये दे। उस पर तेरा नाम थोडे ही लिखा है।

अ नाम कहाँ लिखने को कहते हैं मास्टर ?

ब बकवास मत कर दे दे तेरी स्लेट

अ और अब मुझे ?

ब यह ले मेरी स्लेट।

अ (स्लेट उल्टी सीधी घुमाकर) लेकिन तेरी स्लेट पर तो कुछ भी नहीं है। मुझे मास्टर मारेंगे तो ?

ब अगर नहीं देगा तो मैं मारूंगा बोल देता है हाँ। दे दे कहा न।

[उससे स्लट खींचने लगता है। 'अ' न देने का प्रयत्न करता है, लकिन 'ब' उससे खींच लेता है।]

ब हूं। चल जा अब।

अ तू जा, मैं इस पर अभ्यास पूरा करता हूं, फिर आऊंगा। नहीं तो मास्टर हाथ पर छड़ी लगायेगा। तू जा चल

ब तू भी चल, उठ देख नहीं तो ऐ मनू जब मास्टरजी तुझे मारेंगे तो कितना मजा आयेगा, तुझे अभ्यास करके भी सजा और मुझे न करके मजा। नाम बताया तो याद रखना ! (बाल पकड़कर) चल उठ बे।

[उसे उठाता है और साथ लेकर चलने लगता है।]

अ अब कितने मिनट रह गये हैं ?

ब पांच—या ज्यादातर दस। क्यों ?

अ सिर्फ इतना ही ? (घड़ी देखकर) अब तक तो

ब (बड़ों की तरह) स्कूल चलने के लिये कह रहा हूं मैं। (बच्चों की तरह) मास्टर की मार से बचना चाहता है क्यों ? हमारा मजा किरकिरा करना चाहता है क्या अ चल

अ लेकिन मेरी स्लेट खाली है मनू।

मुर्दों की स्लेट कभी भरती है क्या ? चल —

[पार्श्व मे स्कूल के घण्टे की आवाज ।]

ब । अब अपनी अपनी भूमिका करेंगे ।

अ चल अब किसी शहर का सीन लगायें। (कुआ तोड़ने जाता है)

ब (उसे रोककर) नहीं, इस गाव को नही छोड सकते इतने म ही क्या समझ होंगे लोग ? गाव के और एक दो सीन करते हैं ।

अ पर मुझसे नही होगा ?

ब होगा । तूने किया भी है हर बार । इतने ही सीन से तेरा करेक्टरायजेशन पूरा नहीं होगा । तून तो न जाने कितने बार मेरे साथ छल-कपट किया है । अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिये तून मेरा

अ (हसकर) ठीक कह रहे हो, इतन ही रोल से परफेक्शन नही मिलेगा ।

ब (याद करते हुये) हमने अगर राधा का सीन किया हो ?

अ (सहमकर अचानक) राधा ? कौन राधा ? मैं किसी राधा वाधा को नही जानता ।

ब राधा के सीन के बिना, इस कहानी को रफ्तार नही मिलेगा और मुझे, तुम्हे उसके बिना उत्साह भी नहीं आयगा ।

अ लेकिन कौन राधा ? कैसी राधा ?

[पुन तुरन्त बचपन का दृश्य शुरू होता है ।]

ब रघु····

अ : रघू ? हां मैं अब रघू, मेरी निश्चित भूमिका मिल गई तू मनू राईट यु आर राईट। ए मनू।

ब रघू, राधा के सामने ऊँची आवाज में मत बोल, बोल देता हूं।

अ क्यों ? यह राधा तेरी कौन लगती है रे ? उस दिन जब मास्टर ने तुझे छडी मारी तो यह तेरे हाथों को सहला रही थी। ए राधा यह क्या तेरा पति बनने वाला है ? ए साली शर्मा गई, देख शर्मा गई। ए राधा बोल देता हू तू मेरी ही औरत बनेगी बडी होने पर।

ब ऐ रघू, कह देता हू राधा के बारे में कुछ भी उल्टा सीधा बोला तो देख लेना हां। उसकी और मेरी जमती है। य है की नही राधा। ऐ तू ही बता न

अ साला कडवूराम, तू होशियार होगा पर उल्लू तो दिखता है। राधा तेरे साथ जचेगी क्या ? ए राधा तू चिढा मत हां।

ब (ताली बजाकर) अच्छा हुआ अच्छा हुआ, तुझ उत्तर मिल गया, तुझ उत्तर मिल गया।

अ रुक साले रुक, तेरी खबर लेता हू झुक, नीचे झुक अब तेरी बारी है

ब ऐ राधा अब तू जा

अ ऐ राधा हिलना मत—हां एसे—नही तो मारूंगा याद रख।

ब (झुकता है) ऐ राधा आंख बन्द कर ले न

अ ऐ तू आख मत बन्द करना अब देखना कैसे लडकी की तरह रोयेगा।

ब ठीक है मैं खुद ही अपनी आंख बन्द कर लेता हूं।

['ब' झुका हुआ है। 'अ' पीछे से दौड़कर आता है। उसकी पीठ पर कूदकर बैठ जाता है।]

अ ताड़ ताड़ ताड़ी
लाल घोड़ा माड़ी,
जामुन के पेड़ पे,
कितने अण्डे हैं।

ब (उंगली दिखाकर) एक!

अ गलत SSS फिर से
(भागकर जाता है पुन कूदकर बैठ जाता है)

अ ताड़-ताड़ ताड़ी
लाल घोड़ा माड़ी,
जामुन के पेड़ पे
कितने अण्डे हैं।!

ब पांच!

अ गलत फिर से (राधा चली जाती है) ऐ राधा कहाँ भागती है, रुक साली एक भाग गई

ब ऐ रघू, तू मुझ से कितना भी छल-कपट कर ले, पर राधा के विषय में मुझसे सहन नहीं होता।

अ ऐसे रोज से राधा जैसी पत्नी थोड़े मिलेगी। तू देखता रह। बड़ा होने पर राधा को अपनी पत्नी कैसे बनाता हूं मैं।

ब लेकिन राधा तुझसे शादी नहीं करेगी, वह तो मुझसे करेगी शादी।

अ राधा क्या राधा का बाप भी करेगा शादी।

ब उल्लू

अ क्यों क्यों ?

ब लेकिन बाप कैसे शादी करेगा।

ब (कोने मे बैठा है) (अ आता है)
तू मुझसे कुछ कहने आया है मनू ?

अ हां, मतलब अब केवल 17 मिनट रह गये हैं। अब क्या करेंगे ?

ब लोग गाव मे उलटी-सीधी बातें कर रहे है। कौन है वह कमीना आदमी। राधा ने कुए मे कूदने की कोशिश की। छोटी सी उम्र मे उसे बहुत बडा सदमा पहुँचा है। वह खाती नहीं, कुछ बोलती नही।

अ मुझे लग रहा है, कहानी बहुत काम्पलीकेटेड होती जा रही है।

ब (जोर से) जब तक इस कहानी का अत नही हो जाता। हम दोनो यही रुकेगे। अभी 15 मिनट है बाकी।

अ (घडी देखकर) ठीक है।

[दृश्य बदलता है। 'अ' रघू बनकर आता है। मनू एक कुर्सी पर बैठा है।]

अ मनू ओ मनू

ब कौन है ?

अ मैं रघू। अरे ऐसे अंधेरे मे क्यों बैठा है। मैं तुझे मुबारकबाद देने आया हू। भई तूने तो कमाल ही कर दिया।

ब, क्या कह रहा है, कैसी मुबारकबाद रघू।

अ मुबारक हो, अगले महीने ही तेरी राधा के साथ शादी होने वाली है।

ब मेरी शादी राधा से रघू यह क्या कह रहा है ?

अ इतना बडा काम कर डाला है। तूने। राधा को गाव के जगल म

ब (आश्चय से) मैं ? कौन कहता है ऐसा। किसन उडाई यह अफवाह ? मेरा नाम लगा रह हैं सब ?

अ अब मारा गाव ले रहा है तेरा नाम।

ब ममथा यह तेरा काम होगा, तूने ही उडाई होगी अफवाह। तरी बचपन से आदत है यह तू मुझे हमशा फसाता आ रहा है।

अ हाँ—समझ ले मैंने ही उडाई है अफवाह, पर गाव वालो ने कस सच मान लिया।

ब तरा गाव गया भाड म, राधा जो कहगी वह सच होगा वही सही आदमी का नाम बतायेगी। आज नही तो कल, कल नही तो परसा

अ नही मनू नही कल दोपहर को ही उसने नाम बताया ?

ब किसका ? किसका नाम बताया उसने।

अ तेरा।

ब गलत है यह। तू झूठ बक रहा है।

अ इस बार मैं झूठ नही कह रहा हू। राधा का बाप आया था मेरे पास—मेरा मतलब ऐसे प्रसग के समय उसे मेरे पास आना ही था

ब क्यो ? किसलिये ? कही तुझ पर शका

अ होगी। लकिन मैंने उसकी शका दूर कर दी।

ब कैसे ?

अ पहले बताया न, एक भी शब्द झूठ नहीं कहा मैंने। मने कहा, मैंने ही राधा के साथ मुह काला किया है।

ब रघू कमीने, कुत्ते नीच,

अ सुन पहले अब तू कुछ भी कर ले बच नहीं सकता। *क्योंकि राधा ने खुद ही तेरा नाम बताया है।*

ब मैं ? मेरा नाम ? राधा ने ? यह कैसे हो सकता है।

अ हो नहीं सकता पर अब हो गया है। मैंने खुद राधा के बाप को समझा कर कहा, मैं यह शादी नहीं करूंगा, यह पत्थर पर खींची लकीर समझो। मैं खुले बाजार में ना करूंगा और कुछ ज्यादा हुआ तो बम्बई भाग जाऊंगा पर शादी नहीं करूंगा। आप राधा को समझा दीजिये। वैसे भी राधा मनू से प्यार करती है और मनू भी उसे जी जान से चाहता है। इसलिये बेहतर यही होगा वह खुद ही उसी का नाम ले। (हंसकर) और अब लगता है, राधा भी राजी हो गई है।

ब *पर राधा ने गलत किया। संकट खड़ा कर दिया है। और तू सही सलामत बच रहा है बिल्कुल शरीफो की तरह।*

अ यह तो अपना बचपन से ही चलता आ रहा है, लफड़े करूं मैं और फंसे तू। ('ब' जाने लगता है) कहां जा रहा है ?

ब राधा के घर। वह तेरा नाम बतायेगी। तू इस तरह अबके नहीं बच सकता।

अ मूर्ख है तू। हर रोज अगर ऐसे ही किसी न किसी का नाम लगी तो वैश्या और उसमें फर्क क्या रहेगा।

ब लेकिन असलियत बाहर आनी चाहिये।

अ वह तो सात महीने के बाद आने ही वाली है।

ब नीच कमीने चंडाल तेरे मुंह में कीड़े पड़े। मैं शादी से इंकार कर दूंगा।

अ ना अ तू इंकार नहीं कर सकता। और तुझ यह करना भी नहीं आयेगा।

ब क्यों ? मैं चिल्ला चिल्लाकर कहूंगा।

अ ऊं हां तू चुप रहेगा। उसी के साथ शादी करेगा नहीं तो गाव वालो के हाथो मारा जायेगा।

ब मुझे उसकी परवाह नहीं है। लेकिन तू ऐसे नहीं बच सकता। मैं तेरा पर्दाफाश करूंगा।

अ त ऐसा नहीं कर सकता। क्योंकि राधा की इज्जत का ढिंढोरा पूरे गाव मे पिट जायेगा। वैसे भी तू दिलोजान से चाहता है उसे यह कैसे भूल सकता है। जा रहा हूँ। वैसे शादी तक तो मेरा तोहफा मिल ही जायेगा और हा—मैं आज ही रात को बम्बई जा रहा हूँ।

[पार्श्व मे रेलगाड़ी की आवाज। उन्हीं कुर्सियों के जरिये दीवानखाने का दृश्य लगाया जा रहा है।]

अ कैसे लगा ?

ब सुपर्ब एक्सीलेंण्ट फण्टास्टिक बिल्कुल एक मजे हुए कलाकार की तरह।

['ब' भी दीवान खाने को पूरा करने मे मदद कर रहा है।]

अ वैसे भी मैंने तो ज्यादा नाटक मे काम नहीं किया है अब तुमने साथ दिया इसलिये इतना समय बीत गया।

ब बिल्कुल बचपन से लेकर कहो ? चलो विनोद की इच्छा पूरी हो गई, तुम तो कमाल ही करने जा रहे थे।

अ येस (जब से पत्र पुन निकालकर) अनाउन्समेंण्ट लिखकर रखा था, बांटते समय रुक गया, घूम गया तो···

[हसकर घडी की ओर देखता है] अब केवल 12 मिनट बाकी हैं अब इसकी क्या जरूरत है। (पुन चिटठी पर नजर घुमता है) नमस्कार दोस्तो। आज जो एकाकी अनाउस

ब. रुकिये ? ('ब' को आश्चय से देखता है चिट्ठी फाडने लगता है) आपने मुझे पहचाना ?

अ (नाटकीयता से) नहीं।

ब. शायद मेरे चेहरे पर अब काफी फर्क पड गया है, पिछले तीस साल से मैं भोपाल मे था। पन्द्रह-बीस दिन हुए मैं यहा पर आया हूँ। कमाल है आपने मुझे नहीं पहचाना ? फिर भी इतने सालो के बाद मैंने आपको बराबर पहचान लिया है, मिस्टर।

अ यकीन मानिये, मैं सच कह रहा हू, मैंने आपको पहचाना नही।

ब आप रघुनाथ श्रीवास्तव है, न,।

अ हैलो प्लीज टू मीट यु। और आप ?

ब मेरा नाम जानकर शायद आपको खुशी नही होगी मि श्रीवास्तव।

अ पहेलिया मत बुझाओ नाम बताओ ?

ब मैं मैं मनोहर महाजन।

अ (सहमकर) ओह मन कैसे हो ?

ब आपकी बददुआ से तो ठीक हू। वसे तेरा कसे चल रहा है ?

अ बस ठीक। राधा कैसी है ?

ब राधा मजे मे, एकदम मजे मे है। उसकी तबियत के बारे मे अब चिंता करने की कोई जरूरत नही।

अ (डरते हुये) और मुन्ना ?

ब अरे यार, तेरा ही तो बेटा है, फिर उसके बारे मे पूछने के लिये इतना हिचकिचाने की क्या जरूरत है । एम ए कर रहा है, बहुत होनहार और होशियार लड़का है। मा के अत्याचार के बावजूद इस मुकाम तक पहुंचा है वह।

अ राधा अत्याचार करती थी ?

ब पुरानी यादें आखो के सामने आती ही। पर हमारे लाड प्यार के आग किसी का कुछ नहीं चल पाता था। सुं मा बनकर मैने उसकी परवरिश की, बड़ा किया। उससे मुझे बहुत सी उम्मीदें हैं।

अ तेरे और भी दो बेटे हैं न ?

ब हा कालेज कर रहे हैं, पर दोनो एकदम निकम्मे। केवल मुन्ना सीधा-साधा है। दुनियादारी से दूर बहुत दूर— इतनी दूर के जामुन के पेड़ पर कितने अण्डे हैं वह भी ठीक से गिन नही पाता बेचारा। आप दा व तुम्हारे कितने बच्चे है ?

अ एक भी नही इसलिये तो वह खत ?

ब हा वह खत मुझे मिला।

अ फिर दोनो ने क्या सोचा ? मतलब राधा का क्या जवाब है ?

ब कानूनी भाषा जो तूने खत म लिखी है, वह बेमतलब है, ऐसा तुम्हे नही लगता ?

अ हाँ यहीं बात तो यह है कि हमे आपस मे ही समझ लेना चाहिये। मतलब तुम्हारे तो दो बेटे हैं और मुन्ना मेरा बेटा है यह साबित करना तो " "

]

ब (चिढ़कर) तेरा स्वभाव बदल नहीं सकता रघु, खुद को बेगुनाह साबित करना और"

अ हां। जिन्दगी में कभी हार नहीं मानी। न ही कभी फंसा हूँ। दूसरों को फंसाकर खुद को बेगुनाह साबित करना बहुत बड़े थोम का काम है।

ब। रघु याद है? मेरी बचपन से ख्वाहिश थी, कि एक बार, एक बार सफड़ा मैं करू और उसमें फंसू तू। पर इच्छा पूरी हो इतना मूख तू कभी नहीं बन सका।

अ अब छोड़ो यार

ब लेकिन ख्वाहिश मरती नहीं। खैर तो मैं क्या कह रहा था, हां, सुना राधा का फैसला सुनना है तुझे

अ क्या कहा राधा ने?

ब तेरी बेचैनी को थोड़ा और बढ़ा दूं, तो शायद तुझे बुरा नहीं लगेगा?

अ लेकिन क्यों?

ब क्योंकि वह आज नहीं है इसलिये कल शाम को 6 बजे आना, सी रॉक होटल, कमरा न 147 इंतजार करूं?

अ अफसोस, राइट ऑन टाइम

ब मैं दरवाजा खुला रखूंगा

अ (जाने लगता है) आ के

ब (चिल्लाकर) कम्पलीट ब्लैक आउट—प्लीज कपिल साहब कुछ जोरदार संगीत बजाओ, क्लाइमैक्स सीन है, ऐ यू वह लाइट निकाल दो, वह भी आई वान्ट कम्पलीट-कम्पलीट ब्लैक आउट।

[रंगमंच पर पूर्ण अंधकार होता है। एक जोरदार संगीत बज रहा है। पुनः प्रकाश आता है। "अ" का प्रवेश होता है।]

अ मनू, मैं रघु अब केवल नौ मिनट बाकी हैं फिर तो इस झंझट से छुटकारा मिल जायेगा।

ब आ जाओ दरवाजा खुला है।

(रघु पास आता है)

ब इस बार तुम्हारा आसानी से बच निकलना मुश्किल है मि. रघुनाथ श्रीवास्तव।

[ब' का चेहरा दर्शक की ओर है, वह कुर्सी पर बैठा है। बीच बीच में बोलते समय कराह उठता है।]

अ क्यों ? क्या मुश्किल है ?

ब तेरा आसानी से बचकर निकलना (चेहरा बिगड़ा हुआ है)

अ आजकल राधा क्या कर रही है ?

ब वह मुझे कैसे पता चलेगा ?

अ क्यों ? नहीं तो क्या मुझे पता चलेगा ?

ब वह मर गई।

अ (चौंककर) मर गई ? कैसे ? कब ?

ब चार साल हो गये।

अ ओह तो फिर वह मरा खत।

ब मुझे दे गई।

अ फिर क्या सोचा तुमने ?

ब मुन्ना के बारे में ?

अ हां मुन्ना के ही।

ब सोचना क्या है, फैसला तो उसी समय हो गया।

अ मतलब मैं मुन्ना को ले जा सकता हूं।

ब सवाल ही नहीं पैदा होता।

अ क्यों? वह मेरा लड़का है।

ब (जोर से हंसता है) जिंदगी मे पहली बार चकमा खा गये श्रीवास्तव।

अ इम्पासिबल, केवल छह मिनट रह गये हैं, फिर सारी कहानी पर अपने आप ही पर्दा गिर जायेगा। (विराम) बोल किसका लड़का है वह?

ब वह तेरा नहीं है।

अ फिर किसका है? तेरा?

ब वह मेरा भी नहीं है"

सुन कान खोलकर सुन राधा का बाप और मुन्ना का बाप एक ही है।

अ (चिल्लाकर) नहीं, तेरा दिमाग खराब हो गया है। पागल हो गया है तू।

ब राधा के सदूक से खत और फोटो मिले। अब विश्वास नहीं हो रहा है तो जाने दे, पर तू चकमा खा गया यह तुझे मानना ही पड़ेगा।

अ पर तेरी तरह फँसा नहीं।

ब मानता हूँ लेकिन आज तू बच नहीं सकता।

अ अब केवल पांच मिनट ही बाकी हैं।

ब (उठने का प्रयत्न करता है।) रघु रघु मुझे मुबारकबाद दे।

ब किस बात के लिए ?

अ आज गदहपची मैंने भी और पनैया तू!

ब हायलेम ।

अ कम से कम हाथ तो मिला।

ब क्यों ?

अ इस परफारमस के लिये धन्यवाद दे मुझे [illegible]

ब ओह ! धन्यवाद ।

['अ' हाथ आगे करता है, 'ब' के कमजोर होने के कारण 'अ' के शरीर पर गिर पड़ता है। 'अ' उसे लेकर घूमता है दर्शक की तरफ। [illegible] समय दर्शकों को 'ब' के पीठ मे छुरा दिखाई देता है। 'अ' सकपका जाता है। 'ब' नीचे गिर [illegible] है। 'अ' को ध्यान आता है कि वह शायद [illegible] कर रहा है]

अ गुप्ता मार्वेलस एक्टिंग चल। निकालो अब। उठो [illegible] चार मिनट रह गये है। एबसोलुट परफारमेंस...

['ब' उठने की कोशिश मे पुन गिर जाता है। 'अ' के ध्यान मे सबकुछ अब तक आ जाता है।]

अ एक मिनट इधर ध्यान दीजिये। (दर्शकों से) [illegible] खून हो गया है। मैंने नही किया यह खून। यह [illegible] यहीं मर गया है। यहीं खून हो गया है।

[कुछ कलाकार आयोजक बनकर अलग इधर से प्रवेश करते हैं शायद 'अ' को पकड़ना चाहते हैं]

खबरदार! कोई हिला तो (घड़ी देखकर) [illegible] मे अभी तीन मिनट बाकी हैं। और [illegible]

नियमानुसार यह पर्दा तीन मिनट तक खुला रहेगा । कोई जगह से न हिलें । किसी ने जरा चालाकी करने की कोशिश की तो यह छुरा भोंक दूंगा मैं अब पर्दा गिरने में दो मिनट है । कोई मेरा पीछा नहीं करेगा पर्दा नियमानुसार दो मिनट तक खुला ही रहेगा । मुझे यहां से भागना है । मैं न फंसा हूँ और न फंसूंगा हट जाओ

['अ' मंच से कूदकर हाथ में छुरा लेकर, दर्शकों के बीच से होता हुआ भाग जाता है। पार्श्व में चकरा संगीत । 'ब' मंच के मध्य में मरा पड़ा है ।]

पता
F/14, पालम अपरेल हाउसिंग सोसायटी,
महात्मा फुले रोड,
मुलुंड (पूर्व)
बम्बई-400 081

अ किस बात के लिए ?

ब आज गडबडी मैंन की और फसेगा तू।

अ होपलेस ।

ब कम से कम हाथ तो मिला।

अ क्यों ?

ब इस परफोरमस के लिये धन्यवाद द मुझे धन्यवाद"

अ ओह ! धन्यवाद ।

['अ' हाथ आगे करता है, 'ब' के पास शक्ति न होने के कारण 'अ' के शरीर पर गिर पडता है। 'अ' उसे लेकर घूमता है दशक की तरफ । उस समय दशकों को 'ब' के पीठ मे छुरा दिखाई देता है। 'अ' सकपका जाता है। ब' नीचे गिर पडता है। 'अ' को ख्याल आता है कि वह शायद अभिनय कर रहा है]

अ सुपब मारवेलस एक्टिंग चल। निकालो अब। उठो केवल चार मिनट रह गये है। एक्सीलण्ट परफार्मस

['ब' उठने की कोशिश मे पुन गिर जाता है। 'अ' के ध्यान मे सबकुछ अब तक आ जाता है।]

अ एक मिनट इधर ध्यान दीजिये। (दशको से) यहाँ सचमुच खून हो गया है। मैंने नही किया यह खून। यह आदमी यहीं मर गया है। यहीं खून हो गया है।

[कुछ कलाकार आयोजक बनकर अलग अलग विंग से प्रवेश करते हैं शायद अ' को पकडना चाहते हैं।]

खबरदार ! कोई हिला तो (घडी देखकर) पर्दा गिरने मे अभी तीन मिनट बाकी हैं। और प्रतियोगिता के

नियमानुसार यह पर्दा तीन मिनट तक खुला रहेगा । कोई जगह से न हिलें । किसी ने जरा चालाकी करने की कोशिश की तो यह छुरा भोंक दूंगा मैं अब पर्दा गिरने मे दो मिनट है । कोई मेरा पीछा नही करेगा पर्दा नियमानुसार दो मिनट तक खुला ही रहेगा । मुझे यहा से भागना है । म न फसा हूं और न फसूंगा हट जाओ

['अ' मच से कूदकर हाथ मे छुरा लेकर, दर्शको के बीच से होता हुआ भाग जाता है । पार्श्व मे कर्कश संगीत । 'ब' मच के मध्य मे मरा पड़ा है ।]

पता
F/14, पालम अवरेस हॉऊसिंग सोसायटी,
महात्मा फूले रोड,
मुलुंड (पूर्व)
बम्बई-400 081

"फॉर्मुला 19. . . .

[मंच के एक कोने में, एक टेबुल, कुछ कुर्सियां, फोन इत्यादि पड़ा है। किसी फिल्म का आफिस लग रहा है। एक प्रोड्यूसर बैठा है।]

प्रोड्यूसर (फोन की घण्टी) हैलो जी हाँ मैं बोल रहा हूं। (साहब एक नाम था) बोलो भईया, [थोड़ा सा वक्त है आपके पास] क्यों किसलिए भईया, मैं एक फिल्म की कहानी सुनाना चाहता हूँ] सोरी भईया, टाईम नहीं है।
दूसरा फोन बजता है। क्या है भईया ? आज का अपाईण्टमेंण्ट कैंसिल हो गया है। ओ के ओ के कोई बात नहीं। हैलो अभी अभी मेरी एक अपाइण्टमण्ट कैंसल हुई है। आप चाहें तो अभी इसी वक्त आफिस में आ जाय क्या आ रहे हैं? ठीक है मैं इन्तजार कर रहा हूँ।

[पार्श्व में पश्चिमी संगीत एवं आमउसमेंट आरम्भ होता है।]

लेखक (प्रवेश करता है) नमस्कार, मन जो,

प्रोड्यूसर नमस्कार!

लेखक मैंने अभी कुछ देर पहले पब्लिक टेलीफोन से, फोन किया था।

मूल मराठी रचनाकार "सुधीर कवडो"

प्रोडूसर हाँ, हाँ, याद आ गया, कोई कहानी को लेकर, ओह! येस

लेखक मेरे पास बहुत सी कहानियाँ है सर कौन सी चलेगी

प्रोडूसर भईया एकदम फ्रेश स्टारी चाहिये बिल्कुल ताजा मसाला

लेखक तो सुनिये एक गरीब नव जवान है

प्रोडूसर एक मिनट एक मिनट कहा बम्बई मे या गाव मे

लेखक सर गाव की एक मरघट कुटिया मे

प्रोडूसर गाव सबजेक्ट तो बढिया हैं नेशनल अवाड तो मिल ही गया समझा भईया ।

लेखक जनाब हमारा नवजवान पढा लिखा है, पर निकम्मा है, एक नम्बर का गुडा है देखा सर, इस देश की कितनी बडी समस्या को मने उठाया है,

प्रोडूसर हाँ भाई हमार देश मे केवल तीन ही तो समस्यायें है, एक डाकू समस्या एक स्मगलिंग समस्या ओर तीसरी गुडो की समस्या ।

लेखक अब गरीबी म पैदा हाने की वजह से सीधे बम्बई आने के लिए आकुल दरवाजे पर अपना बोरिया बिस्तर बाधकर खडा है!

[मच के दूसरे कोने मे मा बाप दरवाजे पर सी आफ करने के लिये खडे हैं । लडके के हाथ मे शानदार सूटकेस है । लडका मा बाप के पैर छू रहा है ।]

बाप सभलकर जाना बेटा

माई बम्बई के बारे मे बहुत कुछ उल्टा-सीधा सुन रखा है, बेटा

विजय आप फिकर ना करे डड, मैं सभाल लू गा बम्बई को, सिर्फ आपका आर्शीवाद चाहिये बस

दोनो जाओ बेटे और सफल हाकर लौटना

प्रोड्यूसर तो वह बम्बई पहुँचता है और वहाँ उसका बचपन का साथी मिल जाता है।

लेखक रुको! यहाँ वह एक दूसर को देखत हैं

प्रोड्यूसर और फ्लेश बैक उनके बचपन का गीत शुरू होता है

[पार्श्व मे गीत चल रहा है, यह दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगें बच्चो वाली सायकिल पर दोनों बठे हैं।]

रवि विजय तू

विजय रवि तू

[स्लो मोशन मे दोनो मिलते हैं, पुन गाना गाते हैं एक्जिट]

प्रोड्यूसर अब आगे बोलो भईया

लेखक नही सर वैसे मैं कुछ अलग ही लिखने वाला था।

प्रोड्यूसर अजी अब आपको कौन पूँछता है। जोड़तोड़ तो हम खुद ही कर लत हैं।

लेखक फिर भी एक प्राब्लम है।

प्रोड्यूसर कैसी प्राब्लम ?

लेखक सर, क्या है कि विजय का दोस्त रवि भी अनएम्पलायड है और गलत रास्तो पर जा रहा है

प्रोड्यूसर यह तो और अच्छा है। वेरी गुड सिचुएशन, यहीं पर एक मुजरा डालेगें।

लेखक मुजरा ?

प्रोड्यूसर भईया सीधी बात है गलत रास्ते पर जायेगा तो कोठे पर तो जायगा ही और वह एक बडा दलाल बन गया।

लेखक नही रवि दलाल नहीं हो सकता।

प्रोड्यूसर तुम उसको बनाओ यार दलाल! लिखो लिखो

[लेखक लिखने की माईमिंग करता है। मच पर दूसरी ओर सीन चल रहा है।]

रवि यह मेरी खोली है बैठना !

[पार्श्व मे तबले और पेटी की आवाज]

विजय लेकिन यहाँ ये गाना बजाना

रवि यार यही तो अपना धन्धा है।

विजय मतलब तू ?

रवि हाँ, यार हाँ साली नौकरी नही मिली इसलिये और कर भी क्या सकता था।

विजय अरे पर तुम पढ़े लिखे हो और उस पर तुम ब्राह्मण भी हो

रवि जातपांत भूल जाओ यार, गांधी फिल्म नहीं देखी क्या, बापू क्या बोला था। और जात क्या पेट भर देगी ?

[दोनो फ्रिज होते हैं]

प्रोड्यूसर वाह ! दिस इज लाइफ ! यही तो लाइफ है। बंद करो। अब एक मुजरा डालो

[दृश्य शुरु होता है, टीना का प्रवेश। मुजरे का गीत चल रहा है]

टीना कैसे हो मेरे राजा

विजय तू यहाँ ?

रवि बज गया इसका बाजा, मतलब तू इसे पहचानता है ?

विजय अरे यह रीना अपने गाँव की

टीना अरे जा ! मैं रीना वीना नही टीना हूँ

रवि हाँ यार, तुझे धोखा हुआ है यह टीना ही है।

विजय पर एकदम रीना की जिराक्स कापी, सेम टू सेम नो चेंज

टीना मेरा बाप गया होगा कभी तुम्हार गाँव मे

रवि एसा मत बोल

टीना यह पागल पक्षी कहाँ से पकड लाया रे ?

रवि पागल पक्षी मत बोल। यह तो अपना बचपन का दोस्त रवि है।

[दोना फ्रिज होते हैं]

प्रोडूसर बस-बस अब आगे सुनाओ भईया।

लेखक मै अब क्या सुनाऊँ सर, आप ही तोडफोड कर लीजिय

प्रोडूसर फिर राइटर किस बात के हैं आप ? (विराम) ओके, ओके ना प्राब्लम आपकी स्टोरी लाईन पसद आइ हम, हम इस पर फिल्म जरूर बनायेगें पर आग क्या लिखोगे

लेखक सिम्पल ह सर, यह सीन खत्म हुआ कट गाँव म, रीना अकेली पड के नीचे बैठी है गाना गा रही है।

[पाश्व में गीत]

लेखक कट टू—मुजरा

लेखक आगे ? –

प्रोडूसर तुम्हारा सबजक्ट क्या है ?

लेखक गरीबों पर अत्याचार

प्रोडूसर राइट ना प्राब्लम गाँव जमीदार का सीन

[मच के दूसरे ओर से जमींदार का प्रवेश]

जमींदार उस साले हज्जाम को हाजिर करो ?

[विजय के बाप का प्रवेश]

क्या ब हज्जाम ससुर, लडका एम ए हुई गवा तो का धने के पड पर चढत है। हाँ

बाप नाही हुजूर।

1

जमींदार कल हमार दाढी बनाने काहे नाही आया ?

बाप बुखार था हुजूर।

जमींदार कोल्डारीन काहे नाही ली। हाँ तहरे घर टी वी नाही है न। अपने छोकरे को काहे नाही भेजा ?

बाप ऊकर इम्तेहान चलत है हुजूर

जमींदार अरे तोहरी को, ऊँ पढ लिखकर का करेगा ? तुम लोग केवल हजामत बनावो बस।

बाप मालिक जिदगी भर तो यही किया पर अब हमार छोकरा पढ लिखकर कुछ बन जाये यही हमार इच्छा है।

जमींदार (लात मारता है) अरे हट, अब अगर दाढी नाही बनी, तो तोहरी खाल खिचवा के उमाँ भूसा भरवा दगे हाँ

[सबके सब फ्रीज होते हैं]

लेखक सर, अगर अ याय दिखाना है तो अलग ढग से दिखाओ

प्रोडूसर भईया, अन्याय कम से कम अ याय लगना ही चाहिये।

लेखक सर, सिफ कुए या तालाब पर बलात्कार दिखाकर अन्याय नही दिखाया जाता शहर मे भी ऊँचे स्तर पर अलग ढग से होने वाले अ याय को दिखाया जा सकता है।

प्रोडूसर बलात्कार "इसाफ का तराजू"। हाँ एक रप सीन इसमे जरूर चाहिए

लेखक : रपसीन ? किस पर ?

प्रोडूसर हीरो की बहन पर

लेखक कौन करता है ?

प्रोडूसर कौन करता है, अरे वही जमीदार का लडका

लेखक पर

प्रोडूसर इसमे क्या कठिन है दखो लडकी स्कूल जा रही है ठीक है सामने से जमींदार का लडका आता है।

[दाश्व मे सीन शुरू होता है]

किसन वाह गाव की गोरो, कहा चली छोरी ?

राधा स्कूल मे ?

किसन स्कूल मे (हसता है)

राधा जाने दो हमका मालिक हम तोहार पैर पडत हैं।

किसन किसनावा को जो छोकरी पस द आ जात है, ऊ उसके पैर पर नाही खटिया पर पडत है

राधा भगवान क लिय हमको छोड दो

किसन अरे वाह ! भगवान के लिये तोहका छोड दे और फिर हम का करें

[रीना का प्रवेश, सबके सब फ्रीज होते हैं]

लेखक रीना की एन्ट्री ?

प्रोड्यूसर हाँ भईया रीना की एन्ट्री।

लेखक पर हीरो तो विजय है।

प्रोड्यूसर पिक्चर चलना चाहिये तो इधर रीना ही चाहिये।

[पाश्व मे सीन प्रारम्भ होता है।]

रीना (गुलेल से पत्थर मारती है) अरे छोड द ऊका

किसन रीना तू ?

रीना हाँ हाँ हम तोहार माई छोड ऊका।

किसन नही छोडेगें जा ?

रीना तोहार तो बाप भी छोडेगा (फाईट मारती है)

किसन ई तोहका बहुत महगा पड़गा रीना।

रीना अरे जा जा पानी मे मुह धोकर आ राधा तू अब जा, जा स्कूल मे जा। अरे हम नाही पढ सक तो का हुआ तू तो पढ़

]

राधा हम तोहार ऊपकार कईसे चुकायेगें दीदी

टीना चन ई भाषा छोड ।

राधा : अच्छा हम जान हैं दीदी

प्रोड्सर इधर अब जमींदार का लडका बदले की आग मे जल रहा है वह गरीबा की बस्ती म आग लगवा देता है कट बैक टू बोम्बे टीना अब विजय के प्यार मे पागल उधर सचमुच की आग इधर प्यार की आग, वाह व्हाट ए कान्ट्रास्ट

लेखक व्हाट दी हैल ?

[पाश्व मे मच पर सीन चल रहा है ।]

टीना [विजय पढ रहा है] कितना पढते रहोगे ?

विजय कौन अरे तू ?

टीना मन कहा और कितनी दर पढत रहोगे, कभी एक नजर इधर भी तो देख लिया करा

विजय जा पढने दे डिस्टब मत कर

[टीना नाचना प्रारम्भ करती है बिंदिया चमकेगी फ्रीज]

प्रोड्सर रवि की एन्ट्री रवि को शाक

लेखक सर शाक तो मुझे लग रहा है कही हाट अटैक न हो जाय मेरा ।

प्रोड्सर चुप रहो मईया ~ सिफ विजुलाइज करो

[रवि चेहरा घुमाकर चुपचाप निकल जाता है । विजय और टीना की एग्जिट]

प्रोड्सर : इधर एक और गाना

लेखक फिर एक गाना ?

प्रोडूसर भईया, पूरा एल पी रिकार्ड भरना है एकदम इमोशनल गाना दोस्त दोस्त न रहा बट टू गाव विजय के बाप का खून

लेखक क्या ?

प्रोडूसर गरीबो पर अत्याचार दिखाना है न, फिर थीम छोड़कर कैसे चलेगा।

लेखक हा थीम छोड़कर कैसे चलेगा

प्रोडूसर खून विजय के बाप का इल्जाम रवि पर

लेखक क्यो ? रवि पर क्यो ?

प्रोडूसर भईया सिचुएशन डिमाण्ड और सबूत रवि ब्राह्मण और विजय हज्जाम। रवि की टीना पटा डाली विजय ने। सिम्पल वैरी सिम्पल 'बल्ला'!

लेखक पर यह कस हो सकता है ?

प्रोडूसर सिम्पल एक सीन और एड करो, विजय और रवि का झगड़ा बस

[मच के दूसरी ओर सीन चल रहा है।]

रवि (चिल्लाकर) विजय।

विजय क्या है रवि मर दोस्त।

रवि मत कहो मुन दोस्त।

विजय मगर क्यो ?

रवि आज से मर गया रवि तुम्हार लिय।

विजय। ऐसा मत बोल यार, तुझे अपनी दोस्ती की कसम।

रवि थूकता हूं मै तुम्हारी दोस्ती पर

विजय। न रवि न ऐसा न बोल दिल को चाट लगती है सुनकर।

रवि पूछे हूं तुम्हारे यह आंसू—मगरमच्छ के आसू मत दिखाओ। दोस्ती के नाम पर कलक हो तुम

विजय रवि ?

रवि टीना पसन्द आई इसलिये झूठा नाटक किया तुमने कहा जिरावम वाघी है रीना जसी दिखती है।

विजय बकवास बन्द करो। रवि तुम मरी बात सुनो

रवि पहले तुम मेरी बात सुनो आज तक तुमने मेरी दोस्ती देखी है अब दुश्मनी दखना।

प्रोड्यूसर गाँव। रात का समय। रवि विजय के घर की तरफ जा रहा है।

रवि (रीना टगड़ी अड़ाकर गिराती है। रवि चाकू निकालता है।) कौन है बे ?

रीना हम है।

रवि टीना तु ?

रीना टीना का कहत है बाबू हम रीना है ?

रवि तुम टीना नही हो ?

रीना बस हुई गवा अब नाटक मत करो नही तो (हुल देती है)

प्रोड्यूसर इतने म अदर से आवाज आती है 'खून खून

लेखक खून किसका ?

प्रोड्यूसर विजय के बाप का रवि और रीना की एक्जिट कट टू कोट सीन

कोटबाय मिस रीना हाजिर हो

वकील बोलो जो कहूगी सच कहूगी, सच के सिवा कुछ नही कहूँगी।

रीना मैं जो भी आगे जो आपने बोला ऊ।

वकील रवि को पहचानती हो ?

रीना हा।

वकील कब से।

रीना कल से।

वकील तुम्हारी और इसकी मुलाकात कैसे हुई ?

रीना विजय के घर के बाहर

वकील दैटस आल युअर आनस आप जा सकती हैं

रीना थैंक्यू (एक्जिट)

कोटवाय विजय हज्जाम हाजिर हो (प्रवेश, कसम दिलायी जाती है)

वकील आपका नाम ?

विजय विजय हज्जाम।

वकील आप मुजरिम को पहचानते हैं ?

विजय हाँ।

वकील कब से ?

विजय बचपन से

वकील अब तक आपकी दोस्ती कायम है ?

विजय हाँ।

वकील बम्बई मे आप दोनो का एक झगडा हुआ था ?

विजय दोस्ती मे होता ही रहता है।

वकील विजय इसन तुम्हारे बाप का खून किया है ऐसा इल्जाम है।

विजय यह आरोप बेवकूफी जैसा है ! वकील साहिब

प्रोडूसर कोट सीन डिजोल्वह नया सीन विजय और रवि गले मिलते हैं।

विजय रवि

रवि विजय

विजय रवि, रवि यह क्या किया तुमने ?

रवि क्या किया।

विजय मेरा गुस्सा मेरे बाप पर निकाला।

रवि विजय तुम भी यही सोचते हो ?

विजय हाँ रवि

रवि फिर कोर्ट में तुमने

विजय दोस्ती के लिये झूठ बोला।

रवि विजय रूक जा ! हम असली कातिल का पता लगाना होगा, चल मेरे साथ

प्रोड्यूसर आई बात समझ में भईया जातीय भेद खतम फिल्म टैक्स फ्री

लेखक सर पर मुझे तो कुछ और ही दिखाना था

प्रोड्यूसर क्या दिखाना था ?

लेखक राजनतिक नेता जातिवाद को बढ़ावा देते हैं ऐसा दिखाना था।

प्रोड्यूसर सिम्पल है। जमींदार यानि राजनैतिक नेता। सिम्बोलिक यू सी

लेखक ओ आई सी।

प्रोड्यूसर अब रवि की एन्ट्री जमींदार के घर पर

रवि ठाकुर (चिल्लाकर)

जमींदार कौन है ?

रवि म तुम्हारी मौत

जमींदार रवि तुम ?

रवि हाँ, मैं तुम्हारी मौत

प्रोड्यूसर रवि झपटता है, फाईट सीन, चाचू जमींदार को मारना चाहता है इतने में आवाज

पुलिस रूको रवि, अब हम देखते हैं

रवि आओ मिस्टर अग्रसत्य, जल्दी आ गये

प्रोड्यूसर और क्या चाहिये तुम्हें, जिंदगी के सभी रंग दिखा चुके हैं प्रेम, दुश्मनी, बदला जातिवाद, राजनैतिक और क्या चाहिये तुम्हें इससे ज्यादा हवीक्स रोल और क्या हो सकता है

लेखक और सब तो ठीक है पर रीना टीना का क्या ?

प्रोड्यूसर सिम्पल दी एण्ड का फार्मूला, रीना की रवि के साथ और टीना की विजय के साथ शादी

लेखक इसके बाद ?

प्रोड्यूसर आगे गाना दी एँड

लेखक सच कहा आपने दी एँड यह भी मेरा स्वय का जो अक्सर होता है, हम जैसे लोगों के साथ पर कब तक ! कब तक ! कब तक !!!

पता

76 जय प्रकाश नगर

गोरगाँव (पूर्व)

बम्बई-400 063

"दरवेशी"

[दोपहर बीत चुकी है। पृथ्वी पर सध्याकाल का समय धीरे-धीरे अपना अधिकार जमा रहा है। एक वृक्ष के समीप अब्दुल दरवेशी और सलीम भालू एक दूसरे की छाव का आश्रय लेकर बैठे हुए हैं। सलीम गर्दन नीचे झुकाये अपनी सुधबुध खो बैठा है। बीच बीच मे कुछ बुदबुदा रहा है और अब्दुल उसके शरीर पर स्नेह से हाथ फेर रहा है।]

सलीम अब्बा

अब्दुल बोल

सलीम आफताब अपने घर की ओर रवाना हो रहा है न ।

अब्दुल हां

सलीम बस ऐसे ही लेट रहने को मन करता है—शरीर बहुत दर्द कर रहा है।

अब्दुल सह ले बेटा। तू तो मर्द का बच्चा है, क्या करें ? इस पापी पेट के खातिर कुछ भी करना पड़ता है, ऊपर वाले ने आखिर पेट जो दिया है।

सलीम अब्बा ! नाम मत ले उसका। अब तो उसके नाम से भी चिढ होती है।

अब्दुल ऐसा मत बोल बेटे ! वो तो हमसे कहीं ज्यादा अक्लमंद

मूल मराठी रचनाकार "अनन्त पवार"

और मन्दगार है—अगर उसी ने पेट दिया है, तो उसे भरने की अक्ल भी सबको उसी ने दी है।

सलीम , हाँ बिल्कुल ठीक। बहुत खाल-बाल द रखा है इस शरीर पर। रोज के रोज अगर पाँच पचास भी उखाड़ें ता क्या फर्क पड़ता है गुजा‍ा तो हो हा जायगा, चमड़ी के नीचे पेट तो सही सलामत रहगा न।

अब्दुल ये तू नही बोल रहा है सलीम तेरे जख्म बोल रहे है पर एक बात गाठ बाँध ले, हर जख्म की दवा भी उसी ने दी है। तभी तो तू मौत के मुँह से भी बच निकला। (नजर शू य म रखकर) तुझ तो याद भी नही होगा तेरी ज‍म की कहानी। बहुत पीछे छूट गया वह छोटा सा पहाड़ जहाँ से एक बार आ रहा था मैं—अकेले। सिर पर था नीला आसमान और पर तले थी पथरीली काली जमीन निडर होकर विना लकडी के सहारे एक एक कदम आगे बढ़ा रहा था—घन स घन जगल पार किय नदी नालो को पीछे छोडता चला जा रहा था कि अचानक जगल मे खलबली मच गई सब जानवर-पछी डर के मारे भागने लगे। मुड़कर देखा ता जगल मे आग चुकी थी, और वो आग अजगर की साँस की तरह, फुफकार मारती हुई पडो को घासफूसो को निगलने लगी। सारा का सारा जगल आग की गिरफ्त मे आ चुका था। दखत हा दखत सारा जगल जानवरो स खाली हो गया—वहाँ से मुझे भी बाहर निकलना था—म अभी निकला ही था कि, अचानक मन देखा—कि सामने कुछ हिल रहा है, काल प थर की तरह। नजदीक गया।

सलीम तू था वहाँ, तब बहुत छोटा था। भूख से मर रहा था या पानी के बिना कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था, शायद तुम जानवरों की भगदड़ में तेरी माँ छोड़ गई तुझे वहीं।

एक तरफ आग, एक तरफ तू, मैंने आगा देखा न पीछा। एकदम तुझे सीने से लगाया और जंगल के बाहर की ओर भागने लगा। बूढ़े को आज लकड़ी मिल गई थी। मैं तेरा सहारा बना और तू मेरा। एक दूसरे की परछाँई का सहारा लेकर चलने लगे— आज भी चल रहे हैं। बहुत दूर तक का सफर तय कर रहे हैं। पर चलने की ताकत देने वाला है वो ऊपर वाला बेटा। ये हमेशा ध्यान रखना हर बंदे की देखभाल वही करता है।

सलीम हाँ ठीक कहते हो अब्बा। उस जंगल की आग में राख हो गया होता मैं। ऊपरवाले की मेहरबानी से ही तो मुझे चार पैर, सिर और एक बड़ा पेट मिला, एक भालू बनाया, सब उसकी ही तो मेहरबानी है! वाह रे ऊपर वाले, वाह!

अब्दुल मैं समझ सकता हूँ बेटे तेरा दर्द-पर सह ले आखिर भालू के बाल ही तो है दरवेशी की रोटी दाल, ये जिंदगी होती ही है साली छिनाल,

उसमें तेरा भी बुरा हाल, मेरा भी बुरा हाल!

[सलीम की आंखों के भाव बदल जाते हैं।]

सलीम अब्बाऽऽ— बादल देख कैसे फैल रहे हैं।

अब्दुल (चीखता है) हरामखोर साले! आसमां से बेईमानी करने वाले!

सलीम ठीक कहा अब्बा वो देख ! बादल कैसे बिल्ली की तरह आया और चूहा बनकर, दुम दबाकर भाग निकला !

अब्दुल नालायक बेईमान साले ! अपने पिता समान विशाल आसमा को छोड़कर, दो मिनट की खातिर चमकने वाली बिजली की गोद म घुसने वाले साले

सलीम ये बिजली कौन अब्बा ?

अब्दुल जगमग मायाजाल फैलाने वाली छल दाता वाली जादूगरनी !

सलीम फिर बादल क्यों जाता है उसके पास —

अब्दुल पिता के समान विशाल आसमान की छाती मे उसका दम घुट रहा है ऐसा लगता है उसे ! आजाद होना चाहता है ! किसी का भी सहारा लेना नही चाहता है वो । इसलिये जादूगरनी की गोद म जाता है और बरसात का पानी बनकर बाहर गिर जाता है । पर ये उस ऊपर वाले से देखा नही जाता, उसे फिर गुस्सा आता है वह तपने लगता है और बहे हुए बादल को फिर एक बार अपनी गर्मी क जोर से आसमान क पास भेज देता है ।

सलीम फिर क्या पिता उसे कबूल करता है ?

अब्दुल

सलीम क्या फिर दोनो सुखी हो पाते है ?

अब्दुल

सलीम बोल न अब्बा ! बोल न !

अब्दुल बाप की छाती गहरा समन्दर होती है बेटा !

[पार्श्व में जोर से बिजली की कर्कश आवाज, और फिर पूर्ण अन्धकार ।]

[प्रकाश । अब्दुल मदारी का खेल आरम्भ करने वाला है । समय की आवाज गूँजती है । लोगो की भीड़ जमा होने लगती है। तालियाँ और सीटियां बजने लगती हैं । सलीम लोगो के सामने घूम घूमकर सलाम करता है ।]

अब्दुल जय काली कलकत्ते वाली तेरा वचन न जाये खाली घूमा तेरी लकड़ी बेटा सलीम, सलाम कर सबकू । हरेक कू सलाम कर, ऐ शाबाशऽऽ! बच्चे लोग बूढ़े लोग ताली बजाओ—जोर से—और जोर से—[जनता तालियाँ बजाती है] आपने अभी तक भालू का कमाल देखा—भालू का धमाल देखा । अब आगे गौर से सुनो भाई माययापऽऽ—कान को सावधान करो—दिमाग को थोड़ा परेशान करो—

बाप, मां बच्चो बूढ़ो भाई बहनो, सब लोग बड़े ध्यान से सुनो जिसके लिये आप लोग तरस रहे है जिसकी राह आप आखो से देख रहे है, वह शुरू होने जा रहा है, जंगी कुश्तीऽऽऽ—मेरी और सलीम की

[जनता जोरदार तालियो से स्वागत करती है । इसी बीच सलीम बाकी की तयारियां कर रहा है । जमीन पर कपड़ा मारता है । सामान की गठरी बांधता है इत्यादि, इत्यादि ।]

अब्दुल कुश्ती आदमी और जानवर कीऽऽ—दिमाग और ताकत की, शेर और हाथी की, अब देखो, कौन जीतता, कौन हारता है—ये दुनियां है छोटे मोटे की, खरे खोटे कीऽऽ अच्छे बुरे की—बादशाह वजीर की, ये दुनिया रंगीन है, ये

दुनिया सगीन है। चलाने वाला चलाता है चलने वाले चलते हैं—रोने वाले रोते हैं, यही पर लडकर मरते है।
जो लडता है वही जीतता है—
मैं लडूंगा सलीम लडेगा हम लडेंगे जीतने के लिये—
हम लडेंगे जीने के लिये।
तो होशियार रहना भाईयो—

अब्दुल हाथ बांधकर मत खडे रहना भाईयो आपको आपके मां की कसम है।
तो सलीम आ जा सामने आ जा—
तमाम लोग फिर से एक बार ताली बजाओ!

[जनता जोरदार तालियों से उनका स्वागत करती है]

बेटा सलीम आंख से आंख मिला,
बराबर अन्दाज लगा—कंधे से कंधा मिला—

[दोनों दण्ड बैठक करके आमने खडे होते हैं। आंख से आंख मिलाते हैं! पार्श्व में ताशों की धुन धीरे-धीरे सुनाई पड़ने लगती है। धुन तीव्र हो रही है। तब तक दोनो एक दूसरे का अन्दाजा लगा रहे हैं। ताशों की आवाज जैसे ही तीव्र होती है दोनों एक दूसरे से भिड जाते हैं। लोगों की फुसफुसाहट, दहशत भरी आवाजें एवम बातचीत। एक दर्शक जोर से "वाह"! कह उठता है। इसी दरम्यान तालियों की गडगडाहट और ताशों की आवाज एक दूसरे में लीन हो जाती है। अब्दुल सलीम खूब क्रोधित हो गये हैं। दोनों में खूब झपटा झपटी

होती है। बीच मे ही अब्दुल नीचे गिरता है। परन्तु दूसरे ही क्षण वह पुनः उठता है—और मौका पाते ही सलीम को उठाकर पटक देता है। उसकी छाती पर चढ़ बैठता है, जोर की कर्कश हंसी हसता है। तालियो की गडगडाहट पुनः गूंज उठती है।]

अब्दुल देखो—मैं जीत गया, अब्दुल जीत गया, जीत गया मैं—सलीम हार गया—मैंने अभी अभी हराया इसको आप लोगो के सामने, दरवेशी जीत गया—

भालू हार गया—अक्ल जीत गई, ताकत हार गई—अरे क्या देखते हो? हाथ छोडो तालिया बजाओ, आपको आपके मा की कसम है—जोर से—और जोर से—

[तालियो की गूंज बढती जाती है, धीरे धीरे अंधकार होता है एक प्रकाश की आवृत्ति मे अब्दुल दिखायी देता है।]

अब्दुल भाई साहबऽऽऽ—दादा लोग भालू के बाल ले लो—बाल के तावीज ले लो—गण्डे ले लो—नाखून ले लो— जो पहनेगा भालू के बाल वह होगा मालामाल—परेशानी टल जायेगी—दुश्मनो की जडे उखड जायेगी—गम दूर हो जायेगे ख्वाब पूरे हो जायेगे। दाम ज्यादा नही, फायदा कम नही पेट का सवाल है भाईयो, ये बूढे अब्दुल के, बेटे सलीम के—बस पापी पेट का सवाल है।

[वाणी मे एक अजीब दुःख का समावेश। अब्दुल की दयादृष्टि सलीम पर घूम रही है।]

ले ला भाई सावऽऽऽ, तावीज ले ला—गडे ले लो—
नाखून ले लो– जो खरीदेगा भालू के बाल वह होगा
भगवान, खदा का लाल !

सलीम (कहराता है) अब्बा बहुत दरद हो रहा है रे।

अब्दुल अपनी तो सालो जि दगी है ही एक वाजारू।

[ताशों की आवाज दूर पाश्व मे कहीं खो जाती है।]

दृश्य तीसरा

[सलीम कराह-कराह कर बेसुध पड़ा है। अब्दुल सलीम के जख्मों पर दवा दारू कर रहा है। बीच बीच मे वेदना से असाध्य होकर सलीम उलटने लगता है।]

अब्दुल अब कैसा लग रहा है ?

सलीम ये दद मिटेगा अब तो मौत के ही साथ अब्बा !

अब्दुल दवा और लगा देता हूँ।

सलीम मत लगाओ अब्बा, ऐस कितने और दिनो तक चलेगा ?

अब्दुल क्या ?

सलीम ये खेल, तुम्हारी और मेरी मारामारी, बकवास बाजी।

अब्दुल क्यो रे ? आज अचानक अनमने से क्यो बोल रहा है ?

सलीम ऐसे जीने से मैं तग आ गया हूँ, खतम होने जा रहा हूँ

अब्दुल ऐसा न बोल मेरे लाल ! खेल है, इसीलिय तो गुजारा चल रहा है चल तेर बाल निकालने है तेर बालो पर तो सब लोग मर मिटते हैं एक भी तावीज बेकार नहीं जाती हैं।

सलीम सचमुच अ वा मेरे बालो से लोगो की परशानिया दूर होती है ?

अब्दुल -

सलीम हमीवत म मुसीबतें टलती हैं ? चैन-आराम मिलता है ? शांती मिलती है ?

अब्दुल

सलीम बोल न अब्बा, सच म एसा होता है ?

अब्दुल (अनमने मन स) हाँ, बेटा होता है।

सलीम तू लोगों को धोखा देता है अब्बा।

अब्दुल (आश्चर्य से) सलीमऽऽऽ

सलीम हाँ मैं जानता हूँ। हमारी तावीज से न सुख मिलता है न चैन मिलता है, और न ही परेशानी हटती है। गर एसा होता तो मेरे शरीर पर तो बाल ही बाल हैं तो फिर मैं क्यों इस तरह मारा मारा फिरता हूँ, तेरे साथ एक-एक पैसे के लिये, शरीर पर जख्म लेकर भी बाल उखाड़ने देता हूँ। बोल न! अब्बा बोल।

अब्दुल (सलीम हाथ पकड़ कर स्नेह से नीचे बैठाता है) पागलों की तरह बातें मत किया कर! चल दिखा किधर लगा है। मैं दवा लगा देता हूँ!

सलीम नहीं!

अब्दुल पर आज इत्ते दिनों बाद क्या हो गया है तेरे को ?

सलीम सब कुछ पूछना है आज ?

अब्दुल अब और क्या है ?

सलीम (अब्दुल पर नजर रखकर) आज सवाल खत्म नहीं होगा अब्बा, अपनी कुश्ती के खेल में, हमेशा तेरी ही जीत होती है, मुझे मारता है तू मैं मार खा लेता हूँ, क्यों ? मुझमें तो तुमसे ज्यादा ताकत है, मैं जवान हूँ और तू बूढ़ा। फिर भी हर बार तेरी ही जीत, क्यों अब्बा क्यों ?

अब्दुल क्योंकि मैं हूँ तेरा बादशाह और तू है मेरा गुलाम। तेरे गले में मने गुलामी का फंदा डाला है, उसी के सहारे मैं तुझे नचाता हूँ। मेरा दिमाग तुझे गुलाम बनाता है। और इसी तरह सलीम और अब्बा को, गुलाम और बादशाह का रिश्ता जिंदगी भर बनाये रखना है। यहाँ मैं खेलईया हूँ खेल के चक्रव्यूह को रचाने वाला, दुर्योधन और तुम सिर्फ उस चक्र व्यूह के द्वार को तोडने वाले अभिमन्यु।

सलीम लेकिन कब तक ?

अब्दुल जब तक मैं बादशाह हूँ।

सलीम क्यों ?

अब्दुल क्योंकि मैं अक्लमंद हूँ, हिम्मत वाला हूँ, चालाक हूँ होशियार हूँ, सलीम इस दुनिया में केवल ताकत ही काम नहीं करती। मैने दुनियांदारी देखी है यों ही धूप में बाल सफेद नहीं किये। संसार में पापी पेट की खातिर भड़वे-गिरी करने वाली औलाद का अनुभव लिया हैं मैंने। और तब चालाक बना हूँ। दरवेशी बना। कड़ाके की सर्दियों में, खुले बदन, सर्द रातें काटी हैं, बरसातों में अकेले मीलों चला हूँ। धूप में पैर में छालों का भी कड़ा अनुभव किया है। जिंदगी के मायने समझ गया हूँ मैं। जिंदगी का मतलब अर्थात भला-बुरा, काला गोरा, लाल-पीला, हरा-नीला, भालुओं का समूह, मुट्ठी भर पेट की थैली को भरने के लिये अपने खुद के बाल को बेचकर चलने वाला, लाचारी के जख्मों को सहकर पुन: पुन: पिघलने वाला, आक्रोश करने वाला-गले की रस्सी को फिर भी खींचता हुआ चल रहा है एक दरवेशी-हर मिनट हर सेकंड में वो

अंजाम देता है एक नये खेल को दरवेशी के डमरू की आवाज यानि भालू की आबरू। उसे लोगो का दिल बहलाना है, दिल बहलाते वक्त रास्ते मे आने वाली मुसीबतो का भी सामना करना है। मैं जैसे नचाऊ, नाचना है। जिसके हाथ मे होती है रस्सी वही कहलाता है दरवेशी उसकी ही सब जगह वाह वाही!

सलीम मतलब ?

अब्दुल – सीधा सा मतलब है बेटा, जिसकी लाठी उसकी भैंस!

[अब्दुल के प्रत्येक वाक्य से सलीम क्रोधित होने लगता है। जोर से चीख पडता है।]

सलीम अब्बाऽऽ! मुझे भी बनना है दरवेशी।

अब्दुल क्या ? ऽऽ

सलीम हाँ, अब मैं भी बनना चाहता हूँ दरवेशी।

अब्दुल नही तू नही बन सकता, ख्याल छोड दे।

सलीम क्यो ?

अब्दुल क्योंकि तू है एक बेवकूफ जानवर! बिना अक्ल का! अनपढ !

सलीम मुझे भी चालाक बनना है।

अब्दुल उसके लिये दुनियादारी सीखनी पडती है। फटे हाल जीना पडता है।

सलीम दुनियादारी सीखूंगा फटेहाल जीऊंगा। बाहर की दुनियाँ मे मुझे छोड दे अब्बा। मुझे पहले होशियार बनना है और फिर दरवेशी। हाथ मे डमरू लेकर, नये नये खेल करना है। पब्लिक के सामने। मैं बनूंगा खेलईया-खेल मे चक्रव्यूह को रचने वाला रचयिता तेरी जगह पर। बजाऊँगा मैं

भो जोर से डमरू, करूगा खेल की पुकार, कुश्ती का इशारा-जोर से तालिया बजाओ भाइयो-जोर से और जोर से-मैं जीत गया-मैं जीत गया-मैंने हरा दिया इसको ताली बजाओ (बडबडाते रहता है)

अब्दुल , ये पागलपन छोड दे सलीम ! इतना आसान नही है ये। तुमसे नही हो पायेगा ?

सलीम क्यो नही होगा ? तेरी ताल पर नाच सकता हूँ ? अपने ही बाल उखडवाकर दे सकता हू, अनमने मन से मार खा सकता हूँ तो

अब्दुल कुछ ज्यादा ही चपड-चपड करने लगा है तू ?

सलीम हाँ, आज तक चुप रहा—पर अब चुप रहने वाला नही हूँ, अब्बा मुझ बाहर की दुनिया मे जाने दे ।

अब्दुल बाहर जाने का ख्याल छोड दे सलीम ।

सलीम क्यो ? इतना सता कर, लाचार बनाकर भी अब तक पेट नही भरा तेरा ? म तो जाऊँगा ही अब्बा ।

[सलीम की नजर शरीर के घाव पर टिकी है। अब्दुल कुछ विचार मग्न है ।]

अब्दुल सोच ले ।

सलीम अब कुछ भी नहीं सोचना है ! सिफ दरवेशी बनना है— खेल करना है ।

अब्दुल बहुत पछतायेगा सलीम—

सलीम अब तक पछताता ही आया हूँ । अब और क्या पछताऊगा ? अब ता सारी जिन्दगी अच्छी तरह बितानी है बस ।

अब्दुल (निश्चित रूप मे) अब तू जा सकता है सलीम—तू जा सकता है । लेकिन मरी एक बात गाँठ बाँध ले, तू कभी नहीं

जीत सकता ! तड़प तड़प कर मर जायेगा। धोबी का कुत्ता बन जायेगा न घर का न घाट का—खत्म हो जायगा तू।

[अब्दुल बोलते बोलते कांपने लगता है, पीछे में तीव्र बिजली की कड़कड़ाहट होती है, फिर शुरू होती है, बादलों मे बरसात के पूव का शोर-शराबा।]

दृश्य चौथा

[मंच पर अंधेरे मे एक प्रकाश की आवृत्ति उभरती है। उस प्रकाश मे अब्दुल दिखाई देता है। हाथों मे तावीज लेकर चिल्ला रहा है, उसकी आवाज कमजोर पड़ रही है। नजरे लाचार हो गई है।]

अब्दुल ले लो भाई साहब तावीज ले लो—

दु ख दद मिट जायेंगे, अधूरे ख्वाब पूरे हो जायेंगे, हट जायेगी परेशानी,

सवर जायेगी जिंदगानी, ले लो भाई साहब तावीज ले लो-ले लो भाई साहब ले लो – कुछ तो बोलो—

[बोलते बोलते हताश होकर खुद ही बैठ जाता है। इतने मे दूर से "अब्बा" की आवाज सुनाई पड़ती है। अब्दुल आवाज की दिशा की ओर देखने लगता है। सलीम दिखाई पड़ता है।]

[सलीम दौड़कर आता है, बहुत खुश मुद्रा मे है।]

सलीम • अब्बाऽऽऽ अब्बा देख, देख मैं आ गया।

अब्दुल - कौन सलीम ! तू तू क्यों आया यहां ? तू तो होशियार चालाक बनने गया था न।

सलीम   हाँ, बन गया मैं अब्बा होशियार और चालाक। देख ली जि दगी, तेरी ही तरह जि दगी के रगो को देखने के लिये भटका, चालाक बन गया, अब और क्या चाहिये ?

अब्दुल   मैं नही मानता ! तू बेअक्ल ! तू क्या बनेगा अकलमद ! भले बडी बडी बातें कर मैं यकीन नही करने वाला !

सलीम   तो मैं क्या करू कि तू यकीन करें ?

अब्दुल   कुछ मत कर जसे आया वैसे ही लौट जा।

सलीम   अब्बाSSS—तू कहता है ये ?

अब्दुल   हाँ हमारा रिश्ता तो उसी दिन टूट गया, जब तूने मेरा साथ छोड़ा।

सलीम   क्यो अब्बा—भूल गया तू अपना खेल ? भूल गया वो चाल ? वो तावीज ? भूल गया वो कुश्ती ? रिश्ता कैसे टूट सकता है अब्बा ?

अब्दुल। (व्यग्यात्मक) फिर—फिर तुझे कभी भी याद नही आई मेरी। बुढा कैसे जीता होगा ? सड रहा होगा या मर रहा होगा ? क्या खाता होगा ? कैसे सोता होगा ? कैसे दिन गुजार रहा होगा ? कुछ भी याद नही आया ?

सलीम   याद आई बहुत याद आई तेरी। पर होशियार चालाक अक्लमन्द आदमी दूसरो के दुख दर्द झट भूल जाते हैं। और अब मैं अक्लमन्द हो गया हूँ अब्बा ! बहुत दुनिया देखी। पहाड़ो नदी नालों—मे बहुत भटका। और अब सिर्फ एक आखिरी मकसद बचा है।

अब्दुल   कौन सा मकसद ?

सलीम   मुझे दरवेशी बनना है।

अब्दुल   तू नही बन सकता—

सलीम अब मुझे मालूम है। वैसे भी तेरा जनाजा बहुत जल्दी निकलने वाला है, एक एक दाने दाने को तरस रहा है तू। यहाँ चार दाना भी नही डालता।

अब्दुल हाँ तुझे तो खुशी हो रही होगी!

सलीम नही दया आती है, इधर देख अब्बा ये देख तेरे लिये मैं खाना लाया देख। देख कितना सारा है!

[सलीम झोली उसकी तरफ बढ़ाता है। अब्दुल अविश्वास से सलीम की ओर और फिर झोली की ओर देखता है।]

अब्दुल बेटा ऽऽ—

सलीम तेरी भूख मिट जायगी! बहुत दिनो से इतना खाना भी नही देखा होगा तूने!

अब्दुल हाँ बेटा, मेरे वास्ते लाया है न तू?

सलीम सिर्फ तेरे ही लिये अब्बा—लेकिन एक शर्त है।

अब्दुल क्या?

सलीम मैं दरवेशी बनूँगा! सिर्फ एक खेल, मेरी जिंदगी के मकसद का सुनहरा दिन! तू बनेगा भालू और मैं दरवेशी।

अब्दुल बहुत भूख लगी है बेटा—खाना दे दे थोड़ा सा—

सलीम मैं बजाऊंगा डमरू, तू पब्लिक को सलाम करना—मैं पुकारूँगा तुझे—तू साथ देगा—मैं जीतूँगा कुश्ती—तू हार जाना—

अब्दुल मुझे कबूल है बेटा, सब कबूल है, पहले थोड़ा खाना दे देऽऽऽ—

सलीम (कर्कश हँसी) पहले खेल फिर खाना—

[रस्सी अब्बा के आगे फेंकता है। अब्दुल स्वयं ही न चाहते हुये भी वह रस्सी गले में बांधता है। सलीम डमरू बजाने लगता है और अब्दुल लाचार होकर सब पब्लिक को सलाम करने लगता है।]

पांचवा दृश्य —

[खेल काफी रंग चुका है। सलीम के डमरू की आवाज़ काफी जोशपूर्ण है। अब्दुल पुन पुन पब्लिक को झुक झुक कर सलाम कर रहा हैं खेल के बहुत सारे पहलू बीत चुके हैं। केवल आखिर तमाशा शेष है जंगी कुश्ती का पब्लिक की सांसें रुकी हुई हैं।]

सलीम देखो भाई बहना, बच्चा बूढ़ो अब शुरु होने वाला है जंगी कुश्ती का खेल—आज एक जानवर दरवेशी बनकर तमाशा बनाकर खेल रहा है अपने मालिक को, अपने बादशाह को। देखो लोगों मैं उसे पुकार रहा हूं-ये दुनिया रंगीन है, ये दुनिया संगीन है, चलने वाला चलता है, रोने वाला रोता है। जय काली कलकत्ते वाली, तू भी देख तू भी देख अब तमाशा—(डमरू बजाता है) सब लोग ताली बजाओ ऐ शाबाश ज़रा जोर से हां और जोर से—

[तालियों की कर्कश आवाज़ सुनकर सलीम एक अजीब अनुभव के वातावरण में खो जाता है। उसकी आंखों के सामने घूमने लगता है पुराना दृश्य जिसमें अब्दुल सलीम के बाल नोंच रहा है। नाखून निकाल रहा है। सलीम सहायता के लिये जोर जोर से चीख रहा है।]

सलीम बस कर अब्बा, अब नहीं सहा जाता ! बस कर—

अब्दुल पट का सहारा मत छीन सलीम-तेरे बाल और नाखून पब्लिक खरीदने के लिए टूट पड़ती है, अच्छी रोजी मिल जायेगी ।

सलीम नहीं चाहिये ऐसी रोजी । बस कर अब्बा (व्याकुल हो उठता है)

अब्दुल मुह बन्द कर बेटा— सुन, सुन पब्लिक की तालियाँ जोर से बजाओ, और जोर से और और--

[तालियों की आवाज बढ़ते जाती है अब्दुल जोर जोर से बाल खींचना शुरु करता है सलीम की चीख पुकार अपने चरम सीमा पर पहुच जाती है ।]

[दृश्य बदलता है, सलीम अस्वस्थ होता है ।]

सलीम बहुत दिये हैं दर्द, जख्म बस अब जख्म नहीं होंगे । अब मैं बन गया हू दरवेशी-तूने हजारो बार मुझ पे जुल्म किये- मैं सिर्फ एक बार करू या तू भी देख एक बार मरकर । अब मुझे भी जीतना है । मुझमे तो ताकत तुमसे ज्यादा थी न, पर तू तो ठहरा अक्लमंद, मेरी पूरी जिंदगी बरबाद कर दी, मुझे हर खेल मे तड़पाता रहा अब म अक्लमंद हो गया हूँ, मुझे भी तेरी ताकत का अंदाजा हो गया है । ध्यान से सुन अब्बा मैं तुझे अपनी अक्ल के जरिये हँसा हँसाकर मार सकता हूँ ।

अब्दुल (घबरा कर सलीम के पास आता है) पगले ये क्या कहता है तू ?

सलीम म ठीक कह रहा हुँ ।

अब्दुल गलत मत समझ मुझे बेटे ।

सलीम आज ही तो सही समझा है मन अब्बा ! तू मुझे गलत रास्तो पर चलाता रहा, अब मैं भी तुझे उसी रास्ते पर चलाऊँगा। तेरी छाती पर बैठूगा मु भी तालिया मिलेगी सीटिया मिलेगी, अपना मकसद पूरा करना है, बहुत दिनों का इतकाम लेने आया हूँ।

अब्दुल ऐसा मत कर बेटेऽऽ,

सलीम इतनी जल्दी अपना वादा भूल गये अब्बा, मैंने दिया तुझे खाना और बन गया दरवशी बस सिर्फ एक खेल।

अब्दुल अब और खेलने को मत बोल- और नही होगा मुझसे बेटा बस—

सलीम (कामयाब होने वाली नजरो से) तो देखो भाईयो। अब शुरू होने जा रही है हमारी जगी कुश्ती। हम लड़ेगे जीतने के लिय।

अब्दुल नही-नही, हरामखोर

सलीम यही हरामखोर बुला रहा है अब्बा आगे चलो—आंख से आख मिलाओ—

अब्दुल नमक हराम साले !

सलीम कंधे से कधा मिलाओ।

[ये बोलते ही वह अब्दुल पर टूट पड़ता है। पाश्र्व मे ताशों की धुन बजने लगती है। अब्दुल प्रतिकार करने मे असमर्थ है। अब्दुल अचानक हँसने लगता है, जोर जोर का ठहाका मारकर हसने लगता हैं। पब्लिक की खुसफुसाहट शुरू होती है। अब्दुल हसते रहता है। सलीम आग बबूला हो जाता है। एक ही झटके मे उसे नीचे गिरा देता है। क्षण भर की

शांती। सलीम अब्दुल के पास अपना मुंह ले जाता है। और जोर से हंसने लगता है।]

सलीम : मर गया—मर गया आखिर—देखो, देखो मैंने मारा उसको—एक भालू ने दरवेशी को मारा—एक मुलाजिम ने मालिक को मिटा दिया, जुल्मी को हटा दिया—अरे देखते क्या हो ताली बजाओऽऽ!

[लोग सन्देह भरी दृष्टि से सलीम को देखने लगते हैं। आपस में ही कुछ बुदबुदाने लगते हैं। सलीम का हंसना रुक जाता है। एक गम्भीर वातावरण निर्मित होता है। लोगों की बुदबुदाहट अब धीरे धीरे बढ़ने लगती है।]

सलीम अरे सुना आपने ? तालियों से स्वागत करो भाईयो!—तालियां बजाओ—दाद दो मेरे कमाल को—सब जुल्म खत्म हो गये—सब—मां कसम – अब तो बजाओ—!

एक तू मूर्ख है।

सलीम अरे ? क्या कहा ?

दूसरा तूने अपने मालिक को मार डाला क्यों ?

सलीम मुझे भी तो मारता था वह हर खेल में—मैं भी हार मान लेता था।

एक सच है, पर कभी तुम्हारी जान से तो नहीं खेला।

सलीम हां, पर बहुत जुल्म किये। उससे तो मर जाना कहीं ज्यादा बेहतर है। तालियां बजाओ लोगों—

चौथा तू भी तो उसे यातनाएं दे सकता था।

सलीम मुझे बदला लेना था।

पांचवा : पर मालिक को मारकर तुझे क्या फायदा हुआ, क्या मिला ?

छठा बोल न क्या फायदा हुआ ?

सलीम . तालियाँ बजाओ साहबान, तालियाँ बजाओ—

सातवां क्या तुमने जो किया वो ठीक है? किसी की हत्या कर देने से प्रश्न मिटा नहीं करते।

सलीम . तालियाँ दे दो सिर्फ साहबानों—

एक ऐसा क्यों किया?

सलीम आपकी तालियों की खातिर माई साब—बस आपकी ही तालियों की खातिर—

दूसरा . तेरा साथ हम क्यों दें?

तीसरा खेल खत्म होने जाने पर हमारे रहने का क्या अर्थ?

[अंतिम वाक्य, सब एक-एक करके बुदबुदाकर जाने लगते हैं। सलीम पागलों की तरह सबको रोकने का प्रयत्न करता है। 'तालियाँ बजाओ, तालियाँ बजाओ' की प्रार्थना करता रहता है। परन्तु सब यहां से निकलने की तयारी में है। आखिरकार सब चले जाते हैं शेष बचता है केवल सलीम। सलीम लोगों को प्रस्थान की दिशा की ओर देखता रहता है। और जोर से तिरस्कार वाली नजरों से, 'तालियाँ बजाओ तालियाँ बजाओ' चिल्लाता है।]

सलीम : देख! देख अब्बा—सब भाग गये रे! दोगले साले— देख! देख न अब्बा! देख न अब्बाssss देख न रे!

[सलीम अब्दुल को उठाने का प्रयत्न करने लगता है, कि रंगमंच का पर्दा गिरने लगता है।]

पता
जयंत पवार
C/o चंदेरी पत्रिका,
संपादकीय सहायक
विश्वविजय, 803 भागोजी कीर मार्ग,
माहीम, बम्बई 400016